ISSN 2455-9644

आसरा मुक्तागन

जनवरी–2025

युवा विशेषांक

उठो, जागो और तब तक मत रुको
जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।

₹ 30/-

समाज, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, कला, अध्यात्म, स्वास्थ्य, अनुसंधान

श्री राजन चौधरी, प्रधान आयुक्त, सीमा शुल्क, मुंबई झोन-1 एवं सहायक आयुक्त, सीमाशुल्क श्री. एस. सुरेश, को 'आसरा मुक्तांगन' का 'कस्टम्स के कोहिनूर जमादार बापू लक्ष्मण लामखड़े' पर प्रकाशित विशेषांक की प्रति भेंट करते हुए- श्री बालकृष्ण लोहोटे (संपादकीय मंडल, आसरा मुक्तांगन), श्री संतोष पेडणेकर (अध्यक्ष, ऑल इंडिया कस्टम्स ग्रुप 'सी' ऑफिसर्स फेडरेशन)

You can also follow us on and "Aasara Muktangan"

प्रकाशक-मुद्रक
महानंदा शिरकर

प्रधान संपादक
डॉ. रमेश मिलन

संपादक
डॉ. विमलेश शिरकर

प्रबंध संपादक
मोहन शिरकर

कार्यकारी संपादक
पवित्रा सावंत

उप-संपादक
डॉ. रमेश यादव, गुरुप्रित

संपादकीय मंडल
- डॉ. सुलभा कोरे
- डॉ. सतीश पाण्डेय
- प्रो. कुसुम त्रिपाठी
- श्री स. वि. लव्हटे
- श्री संजय भारद्वाज
- श्री बाळकृष्ण लोहोटे

सलाहकार मंडल
- गयाचरण त्रिवेदी
- डॉ. चंद्रशेखर आष्टीकर
- सरिता आहुजा (कनाड़ा)
- माधवराव अंभोरे
- जानकी प्रसाद, दिल्ली

समन्वयक एवं प्रवक्ता
- डॉ. रत्नाकर सं. अहिरे

जनसंपर्क एवं विशेष आयोजन
- बाळकृष्ण ताम्हाणे
- किशन नेनवानी
- घनश्याम कोळंबे
- दिनेश सिंह
- राजकरन पाण्डेय
- दत्तात्रय कावरे

विधि सलाहकार
- ऍड. रमेश शाह

विशेष प्रतिनिधि
- डॉ. वेणुगोपाल कृष्ण, चेन्नई
- आशीष कुमार, मुंबई

प्रबंध सहयोग
राम विलास शास्त्री
मोबाइल : 8920111592, 991077754

आसरा
मुक्तांगन
www.aasaramuktangan.com
जनवरी-2025 वर्ष : 13, अंक : 5

इस अंक में

संपादकीय-
डॉ. विमलेश शिरकर 5

युवा शक्ति के लिए योजनाएं-
युवाओं की शक्ति का उत्सव- राष्ट्रीय युवा दिवस- 7

स्वामी जी के मुख से-
स्वामी विवेकानंद का वह विश्वप्रसिद्ध भाषण 10

स्वामी जी की कलम से-
हमारा राष्ट्रीय महापाप 12

अजित प्रधान- बीते दिनों की यादें... 16

आलोक भट्टाचार्य-
युवा सन्यासी के सपनों का भारतीय युवक 19

स.वि. लव्हटे- युवा वर्ग : समस्याएं और समाधान 21

चंद्रकांत खोत- विवेकानंद जैसा कोई नहीं 23

रोमां रोलां- करूणा में भीगा वह राजसी भाव 26

डॉ. दामोदर खडसे- छड़ी 28

स्वरांगी साने- सैटल होना मतलब आपके लिए क्या है? 30

नवीन कुमार पांचोली- ग़ज़ल 31

शैलेन्द्र श्रीवास्तव- महाकुम्भ 32

मईनुदीन कोहरी 'नाचीज बीकानेरी'- पतंग महोत्सव 34

अशोक गुजराती- घुटना 34

विजय गर्ग- पर्यावरण बचाने के साथ संवारे अपना भविष्य 35

मोहन शिरकर- अजेय स्वाभिमान- नेताजी सुभाष चन्द्र बोस 36

राम विलास शास्त्री- मकर संक्रांति- हिंदू धर्म का एक प्रमुख पर्व 38

स.वि. लव्हटे-
युवाओं को सकारात्मक दिशा दे रहा है निरंकारी मिशन 39

हृषिकेश शरण-
वैर रूपी बीमारी का उपचार : प्रेम, दया, करूणा 41

अकादमिक मंडल

न्यायमूर्ति अनंत डी. माने
उच्च न्यायालय, मुंबई (सेवानिवृत्त)

श्री ऋषिकेश शरण
प्रशासक

डॉ. नरेशचंद्र
प्रतिकुलपति, मुंबई वि.वि. (सेवानिवृत्त)

डॉ. माधुरी छेड़ा
शिक्षाविद

साहित्य मंडल

डॉ. सूर्यबाला
साहित्यकार

डॉ. दामोदर खड़से
साहित्यकार

डॉ. रामजी तिवारी
शिक्षाविद-समीक्षक

डॉ. दामोदर मोरे
मराठी कवि

सहयोग

राष्ट्रभाषा प्रसार समिति, वर्धा

धनंजय शिंदे

सुनील पाटिल

शबाना पटेल

श्रद्धा गांगन

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में लेखकों के अपने विचार हैं। संपादक का इनके साथ सहमत होना आवश्यक नहीं हैं।

- संपादक

'आसरा मुक्तांगन' का अभियान 'वृक्ष लगाएं, बढ़ाएं'

वर्तमान में तापमान हर जगह बढ़ रहा है। पसीना, गर्मी और उससे उत्पन्न तकलीफें...मानव झुलस रहा है, जमीन तप रही है, उसमें दरारें पड़ रही है, पशु-पक्षी आदि सभी जीव गर्मी में झुलस कर मर रहे हैं और पेड़-पौधे भी पानी के अभाव में सूख रहे हैं।

यह है 'ग्लोबल वार्मिंग' का परिवेश, जो हम सबको एक ऐसे माहौल की ओर ले जा रहा है, जहां हमारे विश्व, हमारी भविष्यगत पीढ़ी को बहुत कुछ भुगतना पड़ेगा। हमने घर, रास्ते बनाएं; हमने अपने लिए संरचनात्मक सुविधाएं जुटायी और इन सब बातों को अंजाम देने के लिए हम वृक्षों को काटते गए।

वृक्ष इस पृथ्वी का सहारा, हमारा पनाहगार जो भूमि के अंदर जाकर अपनी जड़ों से पानी को संवर्धित करता है और जमीन से ऊपर बढ़कर बादलों को आसमान से नीचे उतरवाकर बरसात करवाता है तथा हमें छांव देकर कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन कम करते हुए ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाता है।

वृक्ष का महत्व, पर्यावरण में उसकी उपयुक्तता असाधारण है, जिसे हमें जानना, पहचानना और समझना होगा। अन्यथा हम स्वयं भी झुलसते रहेंगे और हमारी भविष्यगत पीढ़ी को इससे भी ज्यादा झुलसाते रहेंगे।

पर्यावरण के संवर्धन को 'आसरा मुक्तांगन' ने अपना जीवन उद्देश्य बनाया है। हर परिवार दो-तीन वृक्ष लगाएं, उनका संवर्धन करें। इसलिए 'आसरा मुक्तांगन से संबंधित सभी संस्थाओं, सदस्यों, समर्थनकर्ताओं, संरक्षकों तथा भारत के सभी परिवारों से अनुरोध है, अपील है कि वे 'वृक्ष संवर्धन अभियान' के बारे में अपने क्रियाकलापों, गतिविधियों से संबंधित फोटो- जानकारी के साथ नीचे दिए गए पते पर 'आसरा मुक्तांगन' हेतु प्रेषित करें। आपके प्रयासों को उचित स्थान और प्रोत्साहन देना, हमारा काम होगा...

आसरा मुक्तांगन, पोस्ट बैग-01,
कलवा, ठाणे-400605 महाराष्ट्र, भारत
ईमेल- aasaramuktangan@gmail.com

'आसरा मुक्तांगन' के संदर्भ में

'आसरा मुक्तांगन' राष्ट्रभाषा हिंदी तथा राष्ट्र को समर्पित एक साहित्यिक मासिक पत्रिका है। समाज, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, कला, अध्यात्म, स्वास्थ्य और अनुसंधान को दृष्टिगत रखते हुए एक सशक्त राष्ट्र की नींव को परिपुष्ट करना पत्रिका प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य है। नवयुवकों, नारी तथा बुजुर्गों में जागृति का संचार करना तथा देश में घर-घर तक साहित्य और संस्कृति के उच्चतम संस्कारों को पुष्पित एवं पल्लवित करने के लक्ष्य पूर्ति हेतु, पत्रिका सतत प्रयत्नशील है। पत्रिका का प्रकाशन 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओतप्रोत प्रकाशक एवं संपादक मंडल का एक सारस्वत अभियान है।

-आसरा मुक्तांगन

संपादकीय- डॉ. विमलेश शिरकर

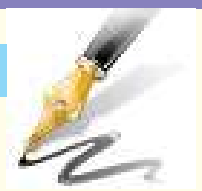

विवेकानन्द जी के सपनों का नवयुवक

मित्रो, सादर अभिवादन! जनवरी माह में वैकुंठ एकादशी, मकर संक्रांति, लोहड़ी, सकट चौथ और मौनी अमावस्या जैसे कई महत्वपूर्ण व्रत और त्योहारों की खूब धूम रही। वहीं राजमाता जिजाऊ, सुभाषचन्द्र बोस, गुरू गोविन्द सिंह की जयंती भी इसी माह में आती है। इसके अलावा, जनवरी के महीने में महाकुंभ भी आयोजित होने वाला है, जो हिंदू धर्म के अनुयायियों के लिए विशेष महत्व रखता है।

प्रयागराज में संगम की रेती पर लगने वाला दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक जमावड़ा यानी महाकुंभ सोमवार को पौष पूर्णिमा के शुभ अवसर पर पहले प्रमुख स्नान अनुष्ठान के साथ शुरू हो चुका है। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम स्थल पर होने वाले आस्था के इस महा आयोजन में अगले 45 दिनों के दौरान अध्यात्म के अनेक रंग बिखरेंगे।

महाकुंभ का यह संस्करण 12 वर्षों के बाद आयोजित किया जा रहा है। हालांकि संतों का दावा है कि इस आयोजन के लिए खगोलीय परिवर्तन और संयोजन 144 वर्षों के बाद हो रहे हैं जो इस अवसर को और भी ज्यादा शुभ बना रहे हैं। शायद इसीलिए उत्तर प्रदेश सरकार को भरोसा है कि इस बार महाकुंभ में 35 करोड़ श्रद्धालु आएंगे। प्रयागराज में आयोजित होने वाला महाकुंभ 2025, 'युवा महाकुंभ' का साक्षी बनेगा, जो देश भर से युवाओं और छात्रों का एक विशाल समागम होगा, जो एक सामान्य सूत्र से बंधा होगा। स्वामी विवेकानंद, जिनकी जयंती 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाई जाती है।

प्रत्येक समाज की अपनी पारंपरिक प्रेरणा, मूल्य एवं नैतिकता होती है, जो युवाओं के माध्यम से प्रवाहित होती रहती है। पश्चिमी समाजों से भिन्न एशियाई समाजों की अपनी पारंपरिक ऊर्जस्विता है। यही ऊर्जस्विता चीन, जापान और दक्षिण कोरिया के विकास की प्रक्रिया में उनकी युवा शक्ति का मूल आत्मा बनकर उभरी है। चीन में कन्फ्यूशियस की प्रेरणा आज भी युवा शक्ति को प्रेरित करती है। पारंपरिक ऊर्जस्विता का आधुनिक ज्ञान, विज्ञान एवं तकनीकी के साथ संतुलित संयोग समाज की युवा शक्ति को प्रभावी बनाता रहा है।

एक बड़ा ही महत्वपूर्ण व विचारणीय प्रश्न है। इस विषय पर मेरी सोच कुछ अलग या नयी नहीं है। मैं भी वही सोचता हूँ जो संभवत: भारत में रहने वाला हर व्यक्ति सोचता है। फिर भी औपचारिकतावश जो कुछ कहने जा रहा हूँ उससे पहले मैं यह स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता हूँ कि जो भी बात मैं यहाँ कह रहा हूँ वह मेरी निजी मान्यताओं व विचारधारा को दर्शाती है।

उपरोक्त विषय में मुख्यत: दो शब्दों का प्रयोग होता है। पहला 'युवा शक्ति' दूसरा 'राष्ट्र निर्माण'। अत: पहले यह समझ लेना समीचीन होगा कि युवा शक्ति व राष्ट्र निर्माण से

हमारा क्या तात्पर्य है। युवा शब्द परिभाषित नहीं है। युवा कोई भी हो सकता है। यह हर प्राणी की अपनी सोच और शारीरिक क्षमता पर निर्भर करता है। एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति भी ऊर्जा से ओत-प्रोत अपने आपको मन से युवा मानता है- जिसमें विद्यार्थी, कर्मचारी, कृषक, मजदूर, शिक्षित, अशिक्षित, व्यवसायी, खिलाड़ी आदि सभी सम्मिलित है। इनसे कम उम्र वाले जीवन की व्यवहारिकता से अनभिज्ञ होने के कारण राष्ट्र निर्माण में अधिक भागीदार नहीं हो सकते। दूसरी ओर 40 से ऊपर की आयु वाले यह समझ बैठते हैं कि उन्होंने अपना लक्ष्य निर्धारित कर लिया है या फिर जीवन जी लिया हैं और एक ऐसे कम्फर्ट जोन में आ गये हैं जिससे निकलना उनके लिए अब स्वाभविक नहीं है। अत: राष्ट्रहित में स्वत: कुछ भी करने में इच्छुक नहीं हैं। अन्ततोगत्वा ले देकर राष्ट्र निर्माण व उसकी उन्नति का भार 15 से 35 या 40 वर्ष की आयु के युवाओं के कन्धों पर आ टिकता है। परन्तु जब मैं युवा शक्ति की बात करता हूँ तो मेरे सामने स्वामी विवेकानन्द जी के सपनों का नवयुवक होता है। जिन्होंने इन शब्दों से माँ भवानी के नवयुवकों का आह्वान किया था।

प्रधानमंत्री मोदी अपने संबोधनों में बार-बार विकसित भारत को निर्मित करने के लिए युवा शक्ति की सहभागिता की बात दोहराते रहते हैं। इसी युवा वर्ग को विकास की शक्ति में रूपांतरित करने के लिए शिक्षण संस्थान एक सतत एवं सचेत परियोजना पर काम कर रहे हैं। इसे प्रधानमंत्री मोदी के 'आह्वान' को साकार रूप देने की कोशिश के रूप में भी देखा जा सकता है।

विकसित भारत की संकल्पना को साकार रूप देने में युवा आबादी की अहम भूमिका रहेगी। एक तो उन्हें विकसित भारत मिशन के लिए जागरूक मानवीय शक्ति के रूप में निखारा जाएगा। दूसरा, इस लक्ष्य में उनकी सलाह लेकर उन्हें समूची प्रक्रिया में शामिल कर उन्हें इस मिशन के प्रभावी सक्रिय तत्व के रूप में विकसित करने की दिशा में काम किया जाएगा।

❑❑❑

क्या आप 'आसरा मुक्तांगन' के परिवार में शामिल होना चाहते हैं?

'आसरा मुक्तांगन' की सदस्यता स्वीकार कर आप इस परिवार के सदस्य बन सकते हैं। भारत और नेपाल हेतु सदस्यता दरें-

एक प्रति:	30/-	वार्षिक सदस्यता:	350/-
त्रैवार्षिक सदस्यता:	1000/-	आजीवन सदस्यता:	6000/-

मानद संरक्षण: 1,00,000/-

(डाक/कूरियर 'आसरा मुक्तांगन' द्वारा वहन किया जाएगा)

(चेक ड्राफ्ट 'आसरा मुक्तांगन' के नाम से ही देय होंगे)

बैंक का नाम- Bank of India (Mumbai)

Ac No. : 030120110000055

IFSC : BKID0000301

'आसरा मुक्तांगन'

पोस्ट बैग नं.-1, कलवा, ठाणे-400605 (महाराष्ट्र)

Email : aasaramuktangan@gmail.com

Mobile : 8108400605 / 9029784346

आगामी अंक में...

साथियो! भारत उत्सवों का देश है। हम छोटे-बड़े सभी त्योहारों का उन्मुक्त होकर लुत्फ़ उठाते हैं। 'आसरा मुक्तांगन' समाज, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, कला, अध्यात्म, स्वास्थ्य, अनुसंधान जैसे विषयों की धुरी पर निरंतर आगे बढ़ रही है। आप अपनी कविता, कहानी या अन्य लेख हमें हमारे निम्नलिखित पते पर भेज सकते हैं। आप अपने आलेख सीधे संपादक महोदय को भी भेज सकते हैं। 20 जनवरी 2025 तक मिले लेखों पर विचार किया जाएगा।

ईमेल- aasaramuktangan@gmail.com

व्हाट्सअप- 9152925759

युवाओं की शक्ति का उत्सव- राष्ट्रीय युवा दिवस

युवा शक्ति के लिए योजनाएं

"स्वामी विवेकानन्द भारत के युवाओं को गौरवशाली अतीत और भव्य भविष्य की मजबूत कड़ी के रूप में देखते थे। विवेकानन्द कहते थे कि सारी शक्ति तुम्हारे भीतर है, उस शक्ति का आह्वान करो। आपको विश्वास होना चाहिए कि आप सब कुछ कर सकते हैं। स्वयं पर यह विश्वास और असंभव को संभव में बदलना आज भी देश के युवाओं के लिए प्रासंगिक है और मुझे खुशी है कि भारत का युवा इस बात को भली-भांति समझता है। युवा आत्म-विश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है।"

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

राष्ट्रीय युवा दिवस प्रत्येक वर्ष 12 जनवरी को महान आध्यात्मिक नेता, दार्शनिक और विचारक स्वामी विवेकानंद की स्मृति में मनाया जाता है, जिनका युवाओं की क्षमता में अटूट विश्वास देश के युवा नागरिकों के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। उनका प्रेरक जीवन और सशक्त संदेश युवाओं से अपने सपनों को संजोने, अपनी ऊर्जा को उजागर करने और उनके कल्पित आदर्शों के अनुरूप भविष्य को आकार देने का आग्रह करता है। युवाओं को 15-29 वर्ष के आयु वर्ग के रूप में परिभाषित किया गया है, वे भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 40% हैं। समाज के सबसे जीवंत और गतिशील वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाला यह समूह देश का सबसे मूल्यवान मानव संसाधन है। अपनी असीमित क्षमता के साथ, युवा भारत को प्रगति और नवाचार की नई ऊंचाइयों पर ले जाने की शक्ति रखते हैं। राष्ट्रीय युवा दिवस इस क्षमता को स्वीकार करने, उत्सव मनाने और दोहन करने का क्षण है, जो युवाओं को देश के विकास में सार्थक योगदान देने के लिए प्रेरित करता है।

विकसित भारत युवा नेता संवाद- स्वामी विवेकानन्द की 162वीं जयंती के उपलक्ष्य में विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग 2025, 11-12 जनवरी, 2025 को नई दिल्ली के भारत मंडपममें आयोजित किया जा रहा है। केंद्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेल तथा श्रम एवं रोजगार मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने 11 जनवरी 2025 को विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग का औपचारिक उद्घाटन किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी 12 जनवरी 2025 को 30 लाख से अधिक प्रतिभागियों में से योग्यता-आधारित, बहु-स्तरीय प्रक्रिया के माध्यम से चुने गए पूरे भारत के 3,000 गतिशील युवा नेताओं के साथ भी बातचीत करेंगे। इस कार्यक्रम का उद्देश्य 25 साल पुरानी परंपरा को तोड़ना है जब राष्ट्रीय युवा महोत्सव को पारंपरिक तरीके से आयोजित किया जाता था। यह युवाओं को विकसित भारत के लिए नवीन समाधान प्रस्तुत करने के लिए मंच प्रदान करेगा। प्रतिभागी प्रौद्योगिकी, स्थिरता, महिला सशक्तिकरण, विनिर्माण और कृषि सहित भारत के विकास के लिए महत्वपूर्ण दस विषयगत क्षेत्रों पर प्रधानमंत्री के सामने प्रस्तुतियाँ देंगे। इसके अतिरिक्त, इन विषयों पर सर्वश्रेष्ठ निबंधों का संकलन भी जारी किया जाएगा। अनोखे माहौल में, प्रधानमंत्री दोपहर के भोजन के लिए युवा नेताओं के साथ शामिल होंगे, जिससे उन्हें अपने विचारों, अनुभवों और आकांक्षाओं को सीधे उनके साथ साझा करने का अवसर मिलेगा।

राष्ट्रीय युवा दिवस के उद्देश्य– स्वामी विवेकानन्द के जीवन और संदेश के बारे में जागरूकता पैदा करना और युवाओं को राष्ट्र निर्माण में भाग लेने के लिए प्रेरित करना। युवाओं को विभिन्न गतिविधियों में शामिल करना और सेवा और स्वयंसेवा की भावना को बढ़ावा देना।

योजनाओं का पुनर्गठन– युवा कार्यक्रम विभाग ने 01.04.2016 से विभाग द्वारा कार्यान्वित सभी योजनाओं को 3 योजनाओं में पुनर्गठित/समेकित किया।

योजनाएं और पहल– युवाओं को समर्थन देने, उनकी पूरी क्षमता हासिल करने के लिए, युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय के युवा कार्यक्रम विभाग ने कई योजनाएं और पहल की हैं।

1972 में आरंभ किया गया, एनवाईकेएस दुनिया के सबसे बड़े युवा संगठनों में से एक है, जिसका प्राथमिक लक्ष्य युवाओं के व्यक्तित्व का विकास करना और उन्हें राष्ट्र–निर्माण गतिविधियों में शामिल करना है।

राष्ट्रीय युवा नीति (एनवाईपी–2024)– सरकार ने राष्ट्रीय युवा नीति (एनवाईपी)2014 की समीक्षा और उसे अद्यतन किया है, नई एनवाईपी 2024 के लिए मसौदा जारी किया है। यह मसौदा सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के अनुरूप भारत में युवा विकास के लिए दस साल के दृष्टिकोण की रूपरेखा तैयार करता है। यह पांच मुख्य क्षेत्रों: सामाजिक समावेशन के लिए प्रतिबद्धता के साथ शिक्षा, रोजगार, युवा नेतृत्व, स्वास्थ्य और सामाजिक न्यायपर केंद्रित है।

राष्ट्रीय युवा कोर (एनवाईसी)– युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय ने 2010–11 के दौरान राष्ट्रीय युवा कोर नामक योजना शुरू की। इस योजना का उद्देश्य अनुशासित और समर्पित युवाओं का समूह तैयार करना है, जिनमें राष्ट्र निर्माण के कार्य में संलग्न होने की प्रवृत्ति और भावना हो, ताकि समावेशी विकास (सामाजिक और आर्थिक दोनों) को साकार करने में सहायता मिल सके। इसका उद्देश्य उन्हें समुदाय में सूचना, बुनियादी ज्ञान के प्रसार के लिए, समूह मॉड्यूलेटर और सहकर्मी समूह शिक्षकों के रूप में कार्य करने और विशेष रूप से सार्वजनिक नैतिकता, ईमानदारी और श्रम की गरिमा

को बढ़ाने के लिए युवा समूहों के लिए रोल मॉडल के रूप में कार्य करने के लिए प्रेरित करना है।

राष्ट्रीय युवा नेता कार्यक्रम– (एनवाईएलपी)– एनवाईएलपी युवा व्यक्तियों के बीच नेतृत्व और नवाचार को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करता है ताकि उन्हें सामाजिक और आर्थिक विकास में प्रभावी ढंग से योगदान करने में सक्षम बनाया जा सके। इस कार्यक्रम का उद्देश्य संस्थागत मंच बनाना है जहां युवा अपने विचार व्यक्त कर सकें और अपने जीवन को प्रभावित करने वाले ऐसे मुद्दों/चिंताओं पर स्थानीय प्रशासन का ध्यान आकर्षित कर सकें, युवाओं को समकालीन सामाजिक–आर्थिक विकास के मुद्दों के बारे में शिक्षित कर सकें और सामुदायिक विकास और सामाजिक कल्याण गतिविधियों पर उन्हें अपने अनुभव और विचार साझा करने में सक्षम बना सकें।

राष्ट्रीय युवा पुरस्कार– युवाओं और गैर सरकारी संगठनों के अनुकरणीय योगदान को मान्यता देते हुए, राष्ट्र निर्माण/सामुदायिक सेवा के लिए उनके द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए हर साल राष्ट्रीय युवा पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। प्रत्येक व्यक्तिगत पुरस्कार विजेता को 1,00,000 रुपए का नकद पुरस्कार, पदक और प्रमाण पत्र दिया जाता है। स्वैच्छिक युवा संगठनों को दिए जाने वाले पुरस्कार में प्रमाण पत्र, पदक और 3,00,000 रुपए की राशि शामिल होती है।

युवा और किशोर विकास के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीवाईएडी)– एनपीवाईएडी योजना के तहत, युवाओं और किशोरों के विकास के लिए गतिविधियां शुरू करने के उद्देश्य से सरकारी/गैर–सरकारी संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस)– एनएसएस की स्थापना 1969 में की गई थी। यह छात्रों को 'मैं नहीं, बल्कि आप' (स्वयं से पहले आप) के आदर्श वाक्य के साथ सामुदायिक सेवा में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसके उद्देश्यों में शैक्षणिक संस्थानों और समुदायों के बीच सार्थक संबंधों को बढ़ावा देते हुए सामाजिक जिम्मेदारी, नेतृत्व, नागरिक जुड़ाव और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना शामिल है।

यूथ होस्टल– यूथ हॉस्टल किफायती आवास प्रदान करके, सामाजिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देकर यात्रा और अन्वेषण को बढ़ावा देते हैं। होस्टल उचित दरों पर युवाओं के लिए अच्छा आवास प्रदान करते हैं, और केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त प्रबंधकों और वार्डनों द्वारा उनकी देखभाल की जाती है।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग– विभाग विभिन्न युवा मुद्दों पर अन्य देशों और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों/संगठनों के सहयोग से युवाओं के बीच अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य बनाने का प्रयास करता है। विभाग युवाओं से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर संयुक्त राष्ट्र स्वयंसेवकों (यूएनवी)/संयुक्त राष्ट्रीय विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) और राष्ट्रमंडल युवा कार्यक्रम (सीवाईपी) जैसी संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों के साथ भी सहयोग करता है। विभाग ने युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने और लाभकारी रोजगार प्रदान करने के लिए जुलाई, 2020 से संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ) के साथ सहयोग शुरू किया है।

निष्कर्ष– राष्ट्रीय युवा दिवस भारत के भविष्य को आकार देने में युवाओं द्वारा निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका की याद दिलाता है। जब हम स्वामी विवेकानन्द के जीवन और संदेश का स्मरण करते हैं, तो हमें भारत के युवाओं की असीम क्षमता की याद आती है। एनवाईकेएस, एनवाईसी, एनवाईएलपी और अन्य जैसी विभिन्न पहलों और योजनाओं के माध्यम से, युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय युवा व्यक्तियों को सशक्त बनाना जारी रखता है, राष्ट्र-निर्माण और व्यक्तिगत विकास की दिशा में उनका मार्गदर्शन करता है। इन कार्यक्रमों के समर्थन से, युवा न केवल अपने सपनों को साकार करने के लिए सुसज्जित हैं, बल्कि समृद्ध, आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए, राष्ट्र की सामाजिक और आर्थिक प्रगति में भी सार्थक योगदान देते हैं

❑❑❑

स्वामी जी के मुख से-

सिर्फ 30 साल की उम्र में विश्वविजय

स्वामी विवेकानंद का वह विश्वप्रसिद्ध भाषण

मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे देश से हूं, जिसने इस धरती के सभी देशों और धर्मों के परेशान और सताए गए लोगों को शरण दी है। मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि हमने अपने हृदय में उन इस्त्राइलियों की पवित्र स्मृतियां संजोकर रखी हैं, जिनके धर्मस्थल को रोमन हमलावरों ने तोड़-तोड़कर खंडहर बना दिया था और तब उन्होंने दक्षिण भारत में शरण ली थी।

स्वामी विवेकानंद का वह बेहद चर्चित भाषण, जो उन्होंने 11 सितंबर 1893 में शिकागो (अमेरिका) में हुए विश्व धर्म सम्मेलन में दिया था:

अमेरिका के बहनों और भाइयों,

आपके इस स्नेहपूर्ण और जोरदार स्वागत से मेरा हृदय अपार हर्ष से भर गया है। मैं आपको दुनिया की सबसे प्राचीन संत परंपरा की तरफ से धन्यवाद देता हूं। आपको सभी धर्मों की जननी की तरफ से धन्यवाद देता हूं और सभी जाति, संप्रदाय के लाखों, करोड़ों हिन्दुओं की तरफ से आपका आभार व्यक्त करता हूं। मेरा धन्यवाद कुछ उन वक्ताओं को भी जिन्होंने इस मंच से यह कहा कि दुनिया में सहनशीलता का विचार सुदूर पूरब के देशों से फैला है। मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूं, जिन्होंने दुनिया को सहनशीलता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया है। हम सिर्फ सार्वभौमिक सहनशीलता में ही विश्वास नहीं रखते, बल्कि हम विश्व के सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं।

मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे देश से हूं, जिसने इस धरती के सभी देशों और धर्मों के परेशान और सताए गए लोगों को शरण दी है। मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि हमने अपने हृदय में उन इस्त्राइलियों की पवित्र स्मृतियां संजोकर रखी हैं, जिनके धर्मस्थल को रोमन हमलावरों ने तोड़-तोड़कर खंडहर बना दिया था और तब उन्होंने दक्षिण भारत में शरण ली थी। मुझे इस बात का गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूँ, जिसने महान पारसी धर्म के लोगों को शरण दी और अभी भी उन्हें पाल-पोस रहा है।

भाइयों, मैं आपको एक श्लोक की कुछ पंक्तियां सुनाना चाहूंगा जिसे मैंने बचपन से स्मरण किया और दोहराया है। और जो रोज करोड़ों लोगों द्वारा हर दिन दोहराया जाता है: जिस तरह अलग-अलग स्त्रोतों से निकली विभिन्न नदियां अंत में समुद्र में जाकर मिलती है, उसी तरह मनुष्य अपनी इच्छा के अनुरूप अलग-अलग मार्ग चुनता है। वे देखने में भले ही सीधे या टेढ़े-मेढ़े लगें, पर सभी मार्ग भगवान तक ही जाते हैं।

वर्तमान सम्मेलन जोकि आज तक की सबसे पवित्र सभाओं में से है, गीता में बताए गए इस सिद्धांत का प्रमाण है : जो भी मुझ तक आता है, चाहे वह कैसा भी हो, मैं उस तक पहुंचता हूं। लोग चाहे कोई भी रास्ता चुनें, आखिर में मुझ तक ही पहुंचते हैं।

सांप्रदायिकता, कट्टरता और इससे उपजी हठधर्मिता लंबे समय से पृथ्वी को अपने शिकंजों में जकड़े हुए हैं। उन्होंने पृथ्वी को हिंसा से भर दिया है। कितनी बार ही यह धरती खून से लाल हुई है। कितनी ही सभ्यताओं का विनाश हुआ है और न जाने कितने देश नष्ट हुए हैं।

अगर ये भयानक राक्षस नहीं होते तो होता, लेकिन अब उनका समय पूरा हुआ। आज मानव समाज कहीं ज्यादा उन्नत हो चुका है। मुझे पूरी उम्मीद है कि आज इस सम्मेलन का शंखनाद सभी हठधर्मिताओं, हर तरह के क्लेश, चाहे वे तलवार से हों या कलम से और सभी मनुष्यों के बीच की दुर्भावनाओं का विनाश करेगा।

विवेकानंद जी ने कहा था-

- पढ़ने के लिए जरूरी है एकाग्रता और एकाग्रता के लिए जरूरी है ध्यान। ध्यान के द्वारा ही हम इंद्रियों पर संयम रख सकते हैं। साम, दाम और तितिक्षा अर्थात मन को रोकना, इंद्रियों को रोकने का बल, कष्ट सहने की शक्ति और चित्त की शुद्धि तथा एकाग्रता को बनाए रखने में ध्यान बहुत सहायक होता है।
- मानव-देह ही सर्वश्रेष्ठ देह है, एवं मनुष्य ही सर्वोत्तम प्राणी है, क्योंकि इस मानव-देह तथा इस जन्म में ही हम इस सापेक्षिक जगत से संपूर्णतया बाहर हो सकते हैं। निश्चय ही मुक्ति की अवस्था प्राप्त कर सकते हैं, और यह मुक्ति ही हमारा परम लक्ष्य है।
- जो मनुष्य इसी जन्म में मुक्ति प्राप्त करना चाहता है, उसे एक ही जन्म में हजारों वर्ष का काम करना पड़ेगा। वह जिस युग में जन्मा है, उससे उसे बहुत आगे जाना पड़ेगा, किंतु साधारण लोग किसी तरह रेंगते-रेंगते ही आगे बढ़ सकते हैं।
- जो महापुरुष प्रचार कार्य के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते हैं, वे उन महापुरुषों की तुलना में अपेक्षाकृत अपूर्ण हैं, जो मौन रहकर पवित्र जीवनयापन करते हैं और श्रेष्ठ विचारों का चिंतन करते हुए जगत् की सहायता करते हैं। इन सभी महापुरुषों में एक के बाद एक दूसरे का आविर्भाव होता है- अंत में उनकी शक्ति का चरम फलस्वरूप ऐसा कोई शक्ति संपन्न पुरुष आविर्भूत होता है, जो जगत् को शिक्षा प्रदान करता है।
- मुक्ति-लाभ के अतिरिक्त और कौन सी उच्चावस्था का लाभ लिया जा सकता है ? देवदूत कभी कोई बुरे कार्य नहीं करते, इसलिए उन्हें कभी दंड भी प्राप्त नहीं होता, इसलिए वे मुक्त भी नहीं हो सकते। सांसारिक धक्का ही हमें जगा देता है, वही इस जगत्स्वप्न को भंग करने में सहायता पहुंचाता है। इस प्रकार के लगातार आघात ही इस संसार से छुटकारा पाने की अर्थात् मुक्ति-लाभ करने की हमारी आकांक्षा को जागृत करते हैं।

विश्व इतिहास की एक अविस्मरणीय तिथि- 11 सितंबर

महोदय,

- 11 सितंबर विश्व इतिहास पर यशस्वी प्रभाव-विस्तार की प्रतीक तिथि मेधा एवं प्रतिभा के वैशिष्ट्य के विश्वफलक पर यशस्वी प्रभाव-विस्तार की प्रतीक तिथि है।
- 11 सितंबर, सन् 1893 को शिकागो (अमेरिका) में महान विलक्षण भारतीय आध्यात्मिक सन्त स्वामी विवेकानंदजी ने भारतीय (हिन्दू) धर्म, संस्कृति, दर्शन एवं सभ्यता की यशस्वी पताका विश्व धर्म संसद में फहरायी थी।
- भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के प्रथम सत्याग्रही आचार्य विनोबा भावे का जन्म 11 सितंबर, सन् 1895 को हुआ था।
- मोहन दास करमचन्द गांधी (महात्मा गांधी) ने 11 सितंबर, सन् 1906 को दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के विरुद्ध अहिंसक सत्याग्रह आन्दोलन का प्रारम्भ किया था, जो कालान्तर में, भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, बर्मा, जिम्बाबवे, मॉरिशस, फिजी आदि अनेक औपनिवेशिक राष्ट्रों के स्वाधीनता संघर्ष आन्दोलन का अचूक और सफल मन्त्र तथा हथियार बना।
- विश्व का सर्वाधिक वीभत्स हमला, सन् 2001 को ही अमेरिका पर कट्टर इस्लामी आतंकी प्रहार भी 11 सितंबर को हुआ था।
- संक्षेप में इस तिथि को घटित संदर्भित घटनाओं ने अपने समय में इतना अधिक प्रभाव छोड़ा कि तत्कालीन विश्व इतिहास की धारा ही परिवर्तित हो गयी। यह भी एक सुखद संयोग है कि इसमें से अन्तिम को छोड़कर अन्य सभी के यशस्वी माध्यम भारत मां के सुयोग्य, असाधारण सपूत ही रहे हैं।

❑❑❑

हमारा राष्ट्रीय महापाप

जीवन-संग्राम में सदा लगे रहने के कारण निम्न श्रेणी के लोगों में अभी तक ज्ञान का विकास नहीं हुआ। ये लोग अभी तक मानव-बुद्धि द्वारा परिचालित यंत्र की तरह एक ही भाव से काम करते आये हैं, और बुद्धिमान चतुर व्यक्ति इनके परिश्रम तथा कार्य का सार निचोड़ लेते हैं। सभी देशों में इसी प्रकार हुआ है। परंतु अब वे दिन नहीं रहे। निम्न श्रेणी के लोग धीरे-धीरे यह बात समझ रहे हैं और इसके विरुद्ध सब सम्मिलित रूप से खड़े होकर अपने समुचित अधिकार प्राप्त करने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हो गये हैं।

मैं समझता हूं कि हमारा सबसे बड़ा राष्ट्रीय पाप जनसमुदाय की उपेक्षा है, और वह भी हमारे पतन का एक कारण है। भारत में दो बड़ी बुरी बातें हैं। स्त्रियों का तिरस्कार और गरीबों को जाति-भेद द्वारा पीसना।

तुम अपने देश के लोगों की ओर एक बार ध्यान से देखो तो मुंह पर मलिनता की छाया, कलेजे में न साहस, न उल्लास, पेट बड़ा, हाथ-पैरों में शक्ति नहीं; डरपोक और कायर। यथार्थ राष्ट्र जो झोपड़ियों में निवास करता है, अपना पौरुष विस्मृत कर बैठा है, अपना व्यक्तित्व खो चुका है। इस भारतभूमि में जनसमुदाय को कभी भी अपनी आत्म-स्वत्व-बुद्धि को उद्दीप्त करने का मौका नहीं दिया गया। हिंदू, मुसलमान या ईसाई के पैरों से रौंदे, वे लोग यह समझ बैठे हैं कि जिस किसी के पास पैसा हो, वे उसी के पैरों से कुचले जाने के लिए ही पैदा हुए हैं।

वे लोग जो किसान हैं, वे कोरी, जुलाहे जो भारत के नगण्य मनुष्य हैं, विजाति-विजित स्वजाति-निंदित छोटी-छोटी जातियां हैं, वही लगातार चुपचाप काम करती जा रही हैं, अपने परिश्रम का कुछ भी नहीं पा रही हैं।

फिर जिनके शारीरिक परिश्रम पर ही ब्राह्मणों का आधिपत्य, क्षत्रियों का ऐश्वर्य और वैश्यों का धन-धान्य निर्भर है, वे कहां हैं? समाज का मुख्य अंग होकर भी जो लोग सदा सब देशों में 'जधन्यप्रभवो हिं स:' कहकर पुकारे जाते हैं, उनका क्या हाल है?

हे भारत के श्रमजीवियो तुम्हारे नीरव, सदा ही निंदित हुए परिश्रम के फलस्वरूप बेबीलोन, ईरान, अलेक-जांद्रिया, ग्रीस, रोम, वेनिस, जिनेवा, बगदाद, समरकंद, स्पेन, पोर्तुगाल, फ्रांस, डेनमार्क, डच और अंग्रेजों को क्रमान्वय से आधिपत्य हुआ और उनको ऐश्वर्य मिला है। और तुम? कौन सोचता है इस बात को।

जीवन-संग्राम में सदा लगे रहने के कारण निम्न श्रेणी के लोगों में अभी तक ज्ञान का विकास नहीं हुआ। ये लोग अभी तक मानव-बुद्धि द्वारा परिचालित यंत्र की तरह एक ही भाव से काम करते आये हैं, और बुद्धिमान चतुर व्यक्ति इनके परिश्रम तथा कार्य का सार निचोड़ लेते हैं। सभी देशों में इसी प्रकार हुआ परंतु अब वे दिन नहीं रहे। निम्न श्रेणी के लोग धीरे-धीरे यह बात समझ रहे हैं और इसके विरुद्ध सब सम्मिलित रूप से खड़े होकर अपने समुचित अधिकार प्राप्त करने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हो गये हैं। यूरोप और अमेरिका में निम्नजातीय लोगों ने जागृत होकर इस

दिशा में प्रयत्न भी प्रारंभ कर दिया, और आज भारत में भी इसके लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे हैं। निम्न श्रेणी के व्यक्तियों द्वारा आजकल जो इतनी हड़तालें हो रही हैं, वे इनकी इसी जागृति का प्रमाण है। अब हजार प्रयत्न करके भी उच्च जाति के लोग निम्न श्रेणियों को अधिक दबाकर नहीं रख सकेंगे। अब निम्न श्रेणियों के न्यायसंगत अधिकार की प्राप्ति में सहायता करने में ही उच्च श्रेणियों का भला है।

जिनका ऐशो-आराम में लालन-पालन और शिक्षा लाखों पददलित परिश्रमी गरीबों के हृदय के रक्त से हो रही है और फिर भी जो उनकी ओर ध्यान नहीं देते, उन्हें मैं विश्वासघातक कहता हूं। इतिहास में कहां और किस काल में आपके धनवान पुरुषों ने, कुलीन पुरुषों ने, पुरोहितों ने और राजाओं ने गरीबों की ओर ध्यान दिया था- वे गरीब, जिन्हें कोल्हू के बैल की तरह पेरने से ही उनकी शक्ति संचित हुई थी।

भारतवर्ष के सभी अनर्थों की जड़ है- जनसाधारण की गरीबी। पुरोहिती शक्ति और और विदेशी वितेजातगण सदियों से उन्हें कुचलते रहे हैं, जिसके फलस्वरूप भारत के गरीब बेचारे यह तक भूल गये हैं कि वे भी मनुष्य हैं। हमारे अभिजात पूर्वज साधारण जनसमुदाय को जमाने से पैरों तले कुचलते रहे। इसके फलस्वरूप वे बेचारे एकदम असहाय हो गये। यहां तक कि वे अपने-आपको मनुष्य मानना भी भूल गये। भारत के सत्यानाश का मुख्य कारण यही है कि देश की संपूर्ण विद्या-बुद्धि राज-शासन और दंभ के बल से मुट्ठी-भर लोगों के एकाधिकार में रखी गयी है। भारत के दरिद्रों, पतितों और पापियों का कोई साथी नहीं, कोई सहायता देनेवाला नहीं- वे कितनी ही कोशिश क्यों न करें, उनकी उन्नति का कोई उपाय नहीं। वे दिन डूबते जा रहे हैं। क्रूर समाज उन पर जो लगातार चोटें कर रहा है, उसका अनुभव तो वे खूब कर रहे हैं, पर वे जानते नहीं कि वे चोटें कहां से आ रही हैं। सदियों तक वे धनी मानियों की आज्ञा सिर आंखों पर रखकर केवल लकड़ी काटते और पानी भरते रहे हैं। उनकी यह धारणा बन गयी कि मानों उन्होंने गुलाम के रूप में ही जन्म लिया है। हमारे इस देश में, इस वेदांत की जन्मभूमि में हमारा जनसाधारण शत-शत वर्षों से सम्मोहित बनाकर इस तरह की हीन अवस्था में डाल दिया गया है। उनके स्पर्श में अपवित्रता समायी है, उनके साथ बैठने से छूत समा जाती है। उनसे कहा जा रहा है, निराशा के अंधकार में तुम्हारा जन्म हुआ है, सदा तुम इस अंधेरे में पड़े रहो। और उसका परिणाम यह हुआ कि वे लगातार डूबते चले जा रहे हैं, गहरे अंधेरे से और गहरे अंधेरे में डूबते चले जा रहे हैं। अंत में मनुष्य जितनी निकट अवस्था तक पहुंच सकता है, वहां तक वे पहुंच चुके हैं।

क्या कारण है कि संसार के सब देशों में हमारा देश ही सबसे अधिक बलहीन और पिछड़ा हुआ है? इसका कारण यही है कि वहां शक्ति का निरादर होता है। स्मृति आदि लिखकर, नियम-नीति में आबद्ध करके इस देश के पुरुषों ने स्त्रियों को एकदम बच्चा पैदा करने की मशीन बना डाला है। फिर अपने देश की दस वर्ष की उम्र में बच्चों को जन्म देनेवाली बालिकाएं!!!

प्रभु, मैं अब समझ रहा हूं। हे भाई 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता:' (जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवता प्रसन्न रहते हैं) - वृद्ध मनु ने कहा है। हम महापापी हैं; स्त्रियों को 'घृणित क्रीड़ा', 'नरक का द्वार' इत्यादि कहकर हम अध:पतित हुए हैं। बाप रे बाप! कैसा आकाश-पाताल का 'यथातथ्यतोऽर्यान् व्यद्घात्'। (जहां जैसा उचित हो ईश्वर वहां वैसा कर्मफल का विधान करते हैं।- ईशोपनिषद) क्या प्रभु झूठी गप्प से फूलनेवाला है? प्रभु ने कहा है, 'त्वं स्त्री त्वं पुमार्नास त्वं कुमार उत्त वा कुमारी' (तुम्हीं स्त्री हो और तुम्हीं पुरुष; तुम्हीं क्वारे हो और तुम्हीं क्वारी।- श्वेताश्वतरोपनिषद्) इत्यादि और हम कह रहे हैं, 'दूरमपसर रे चांडाल' (रे चांडाल, दूर हट) 'केनैषा निर्मिता नारी मोहिनी' (किसने इस मोहिनी नारी को बनाया है?) इत्यादि।

यह जाति डूब रही है। लाखों प्राणियों का शाप हमारे सिर पर है। सदा ही अजस्त्र जलधारवाली नदी के समीप रहने पर भी तृष्णा के समय पीने के लिए हमने जिन्हें नाबदान का पानी दिया, उन अगणित लाखों मनुष्यों का, जिनके सामने भोजन के भंडार रहते हुए भी जिन्हें हमने भूखा मार डाला, जिन्हें हमने अद्वैतवाद का तत्त्व सुनाया पर जिनसे हमने तीव्र घृणा की, जिनके विरोध में हमने लोकाचार का आविष्कार किया, जिनसे जबानी तो यह कहा कि सब बराबर हैं, सब वही एक ब्रह्म है, परंतु इस उक्ति को काम में लाने का तिलमात्र भी प्रयत्न नहीं किया।

पृथ्वी पर ऐसा कोई धर्म नहीं है, जो हिंदू धर्म के समान इतने उच्च स्वर से मानवता के गौरव का उपदेश करता हो, और पृथ्वी पर ऐसा कोई धर्म नहीं है, जो हिंदू धर्म के समान गरीबों और नीच जातिवालों का गला ऐसी क्रूरता से घोंटता हो।

अब हमारा धर्म किसमें रह गया है? केवल छुआछुत में- मुझे छुओ नहीं, छुओ नहीं। हम उन्हें छूते भी नहीं और उन्हें 'दूर' 'दूर' कहकर भगा देते हैं। क्या हम मनुष्य हैं?

हे भगवन्! कब एक मनुष्य दूसरे से भाईचारे का बर्ताव करना सीखेगा? धर्म में जाति-भेद नहीं है; जाति तो एक सामाजिक संस्था मात्र है। अत: धर्म का कोई दोष नहीं, दोष मनुष्यों का है।

कर्मकांडों से ऊबकर एवं दार्शनिकों की जटिल व्याख्या से विभ्रांत होकर लोग अधिकाधिक संख्या में जड़वादियों से जा मिले। यही जाति-समस्या का सूत्रपात था एवं भारत में कर्मकांड, दर्शन तथा जड़वाद के मध्य इस त्रिभुजात्मक संग्राम का मूल भी यही था, जिसका समाधान हमारे इस युग तक संभव नहीं हो पाया है।

अवश्य ही जाति-धर्म उत्पन्न हो गया है। अतएव जिसे तुम लोग जाति-धर्म कहते हो, वह ठीक उसका उलटा है। पहले अपने पुराण और शास्त्रों में जिसे जाति-धर्म कहा गया है, उसका सर्वथा लोप हो गया है।

भारत के अध:पतन का कारण क्या था? जाति संबंधी इस भाव का क्या था? जातिसंबंधी इस भाव का त्याग। जैसे गीता कहती है- जाति नष्ट हुई कि संसार भी नष्ट हुआ।... आजकल का वर्ण-विभाग यथार्थ में जाति नहीं है, बल्कि जाति की प्रगति में वह एक रुकावट ही है। वास्तव में इसने सच्ची जाति अथवा विविधता की स्वच्छंद गति को रोक दिया है।...प्रत्येक हिंदू जानता है कि किसी लड़के या लड़की के जन्म लेते ही ज्योतिषी लोग उसके जाति- निर्वाचन की चेष्टा करते हैं। वही असली जाति जिन्होंने गरीबों का रक्त चूसा, है - हर एक व्यक्ति का व्यक्तित्व और ज्योतिष इसे स्वीकार करता है और हम लोग केवल तभी उठ सकते हैं जब इसे फिर से पूरी स्वतंत्रता दें। याद रखें कि इस विविधता का अर्थ वैषमय नहीं है और न कोई विशेषाधिकार ही। प्रत्येक दृढ़मूल अभिजात वर्ग अथवा विशेष अधिकारग्रस्त संप्रदाय जाति का घातक है- वह जाति नहीं है। 'जाति' की स्वतंत्रता को; जाति की राह में प्रत्येक रोड़े को हटा दो, बस, हमारा उत्थान होगा।

जो लोग कहते हैं कि अशिक्षित या गरीब मनुष्यों को स्वाधीनता देना अर्थात् उनको अपने शरीर और धन आदि पर पूरा अधिकार देने तथा उनके वंशजों को दशा सुधारने में समान सुविधा देने से वे उन्मार्गगामी बन जायेंगे, तो क्या वे समाज की भलाई के लिए ऐसा कहते हैं अथवा स्वार्थ से अंधे होकर?

पुरोहित-प्रपंच ही भारत की अधोगति का मूल कारण है। मनुष्य भाई को पतित मानकर क्या स्वयं पतित होने से बच सकता है?...क्या कोई व्यक्ति स्वयं या किसी प्रकार अनिष्ट किये बिना दूसरों को हानि पहुंचा सकता है? ब्राह्मण और क्षत्रियों के ये ही अत्याचार के चक्रवृद्धि ब्याज सहित अब स्वयं के सिर पर पतित हुए हैं एवं यह हजारों वर्ष की पराधीनता और अवनति निश्चय ही उन्हीं के कर्मों के अनिवार्य फल का भोग है।

जिन्होंने गरीबों का रक्त चूसा, जिनकी शिक्षा उनके धन से हुई जिनकी शक्ति उनकी दरिद्रता पर बनी, वे अपनी बारी में सैंकड़ों और हजारों की गिनती में दास बनाकर बेचे गये, उनकी संपत्ति हजार वर्षों तक लूटी जाती रही और उनकी स्त्रियां और कन्याएं अपमानित की गयीं। क्या आप समझते हैं कि यह अकारण ही हुआ?

नीच जाति के लोगों से हमारी जनता बनी है, युग-युग से ऊंची जातिवालों के अत्याचार में, उठते-बैठते ठोकरें खाकर एकदम से मनुष्यत्व खो बैठे हैं और पेशेवर भिखमंगों जैसे हो गये हैं। वे हमारी शिक्षा के लिए धन देते हैं, हमारे मंदिर बनाते हैं और बदले में ठोकरें पाते हैं।

अगर हमारे देश में कोई नीच जाति में जन्म लेता है, तो वह हमेशा के लिए गया-बीता समझा जाता है, उसके लिए कोई आशा-भरोसा नहीं। आइये, देखिये तो सही,...त्रावंकुर में जहां पुरोहितों के अत्याचार भारतवर्ष-भर में सबसे अधिक है, जहां एक-एक अंगुल जमीन के मालिक ब्राह्मण हैं...हां लगभग चौथाई जनसंख्या ईसाई हो गयी है।

यह देखो न हिंदुओं की सहानुभूति न पाकर मद्रास प्रांत में हजारों पेरिया ईसाई बने जा रहे हैं, पर ऐसा न समझना कि वे केवल पेट के लिए ईसाई बनते हैं। असल में हमारी सहानुभूति न पाने के कारण वे ईसाई बनते हैं।

भारत के गरीबों में इतने मुसलमान क्यों है? यह सब मिथ्या बकवास है कि तलवार की धार पर उन्होंने धर्म बदला। ...जमींदारों और पुरोहितों से अपना पिंड छुड़ाने के लिए ही उन्होंने ऐसा किया, और फलत: आप देखेंगे कि बंगाल में जहां जमींदार अधिक हैं, वहां हिंदुओं से अधिक मुसलमान किसान हैं।

यह रोना-धोना मचा है कि हम बड़े गरीब हैं, परंतु गरीबों की सहायता के लिए कितनी दानशील संस्थाएं हैं? भारत के लाख-लाख अनाथों के लिए कितने लोग रोते हैं?

हे भगवान्! क्या हम मनुष्य हैं? तुम लोगों के घरों के चतुर्दिक् जो पशुवत् भंगी-डोम हैं, उनकी उन्नति के लिए तुम क्या कर रहे हो? उनके मुख में एक ग्रास अन्न देने के लिए क्या करते हो?

तोते के समान बातें करना हमारा अभ्यास हो गया है- आचरण में हम बहुत पिछड़े हुए हैं। इसका कारण क्या है? शारीरिक-दुर्बल्य यह शारीरिक दुर्बलता कम से कम हमारे एक-तिहाई दु:खों का कारण है। हम आलसी हैं। हम कार्य नहीं कर सकते; हम पारस्परिक एकता स्थापित नहीं कर सकते; हम एक-दूसरे से प्रेम नहीं करते; हम बड़े स्वार्थी हैं; हम तीन मनुष्य एकत्र होते ही एक-दूसरे से घृणा करते हैं, ईर्ष्या करते हैं।

अपने राष्ट्र में Organizational (संगठित होकर कार्यसंपादन करने) शक्ति का एकदम अभाव है। वही अभाव सब अनर्थों का मूल है। मिलजुलकर कार्य करने के लिए कोई भी तैयार नहीं है। Organization के लिए सबसे पहले Obedience (आज्ञापालक) की आवश्यकता है।

हमारे दो दोष बड़े ही प्रबल हैं; पहला दोष हमारी दुर्बलता है, दूसरा है घृणा करना; हृदयहीनता। लाखों मत-मतांतरों की बात कह सकते हो, करोड़ों संप्रदाय संगठित कर सकते हो, परंतु जब तक उनके दु:ख का अपने हृदय में अनुभव नहीं करते, वैदिक उपदेशों के अनुसार जब तक स्वयं नहीं समझते कि वे तुम्हारे ही शरीर के अंग हैं, जब तक तुम और वे धनी और दरिद्र, साधु और असाधु सभी उसी एक अनंत पूर्ण के, जिसे तुम ब्रह्म कहते हो, अंश नहीं हो जाते, तब तक कुछ न होगा।

❑❑❑

'आसरा मुक्तांगन'- सामाजिक सरोकार

'जर्नी फ्रॉम सिग्नेचर टू ऑटोग्राफ'
पुरुषोत्तम स्कूल, नासिक रोड़ में आयोजित कार्यक्रम में छात्रों का मार्गदर्शन करते हुए- डॉ. रत्नाकर अहिरे

अजित प्रधान
(प्रसिद्ध फिल्म संगीत संग्राहक फिल्म- संगीत इतिहास विशेषज्ञ)

एन. दत्ता : दिल के तार छेड़ने वाला संगीत

स्वयं रचित एक गीत वह किसी कार्यक्रम में पेश कर रहे थे, कि वहां मौजूद संगीतकार सचिनदेव बर्मन की नजर इस होनहार युवा पर पड़ी और उन्हें अपना सहायक बनने के लिए आमंत्रित किया। बस यहां से एन. दत्ता का फिल्म करियर सही ढंग से आरंभ हुआ।

बात आज से लगभग पचपन वर्ष पुरानी है। एक फिल्मी गीत पूरे भारतवर्ष में धूम मचा रहा था, 'बिनाका गीतमाला' में वह गीत कई हफ्तों तक 'टॉप' की पायदान पर बज रहा था। वह एक ऐसा दौर था जब 'रॉक एंड रोल' संगीत की

एन. दत्ता 'ठेका' के जादूगर
बीते दिनों की यादें...

फिल्मों में बहुत मांग थी। पाश्चात्य गायक तथा नायक एल्विस प्रेस्ली इसमें माहिर थे और उनकी एक फिल्म आयी थी 'रॉक-एंड-रोल'। इसी फिल्म के संगीत से प्रभावित होकर संगीतकार की उस रचना के बोल थे- "लाल लाल गाल जान के हैं बाबू, (गायक मो. रफी- मिस्टर एक्स), दरअसल इसी गीत को सुनकर उस छोटी उम्र में मेरी उत्सुकता जागृत हुई कि यह संगीत किसका होगा। इसी गीत से हरफनमौला स्व. मुहम्मद रफी साहब की आवाज मैं पहचानने लगा था। इस गीत के संगीतकार थे अपने विविधतापूर्ण संगीत के लिए प्रसिद्ध दत्ता नाईक यानी एन. दत्ता।

एन. दत्ता के नाम से मशहूर दत्ता नाईक का जन्म मुंबई में 12 दिसंबर 1927 में हुआ। दत्ता बाबूराव नाईक यानी एन. दत्ताजी का बचपन गोवन एवं पुर्तगाली लोकसंगीत के वातावरण में बीता। स्कूली शिक्षा में विशेष रुचि नहीं थी। उन्होंने मुंबई आने की ठान ली। मुंबई आकर देवधर संगीत विद्यालय बाकायदा संगीत की शिक्षा ली। फिल्मों में कुछ कर दिखाने की इच्छा से उसी दिशा में कोशिशें करनी शुरू कीं। इसी दौरान उन्हें उस दौर के महान संगीतकार गुलाम हैदरजी का सहायक होने का सुनहरा अवसर मिला। गुलाम हैदर की छत्रछाया में उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिला एवं इस समृद्ध अनुभव के कारण उनमें छिपा संगीतकार जागृत हुआ। स्वयं रचित एक गीत वह किसी कार्यक्रम में पेश कर रहे थे, कि वहां मौजूद संगीतकार सचिनदेव बर्मन की नजर इस होनहार युवा पर पड़ी और उन्हें अपना सहायक बनने के लिए आमंत्रित किया। बस यहां से एन. दत्ता का फिल्म करियर सही ढंग से आरंभ हुआ। फिल्म अफसर (1950), मशाल, बाजी से लेकर टैक्सी ड्राइवर, मुनीमजी आदि अनेक मशहूर संगीतमय फिल्मों में वह बर्मनदादा के प्रमुख सहायक रहे।

सचिन देव बर्मन की 'बुजदिल', 'जाल' आदि फिल्मों के दौरान निर्माता श्री टी.आर. फतेहचंद ने एन. दत्ता की प्रतिभा को भांप लिया एवं अपनी अगली फिल्म के लिए अनुबंधित कर लिया। उस फिल्म का नाम था 1954 में प्रदर्शित 'मिलाप'। इसके नायक नायिका थे देव आनंद और गीताबाली। दिग्दर्शक राज खोसला एवं गीतकार साहिर लुधियानवी। फिर क्या था, पूरी प्रतिभा और मेहनत झोंककर संगीत दिया और उनकी उस पहली ही फिल्म का संगीत बेहद लोकप्रिय हुआ। इस फिल्म का एक दो पहलूवाला गीत 'ये बहारों का समां, चांद तारों का समां...' जो कि हेमंतकुमार एवं लताजी की मधुर आवाज में था, आज भी उतना ही

मधुर लगता है। 'मिलाप' के सभी गीत साहिर लुधियानवी की कलम से निकले थे। उनका परिचय तो एन. दत्ता के साथ तभी से था, जब एन. दत्ता बर्मनदादा के सहायक थे। बस अब यह गठबंधन मित्रता के रिश्ते में बदल गया। एन. दत्ता साहिर साहब के चहीते संगीतकारों में रहे हैं। उनकी रचनाओं 'मैंने चांद और सितारों की तमन्ना की थी' (चंद्रकांता), 'अब वो करम करे के सितम...' (मरीनड्राइव), तंग आ चुके हैं (लाइट हाउस) को मधुर संगीत में ढाल कर एन. दत्ता ने पेश किया था।

एन. दत्ता के इसी गुण को भांपकर साहिर साहब ने उनको जानेमाने निर्माता-निर्देशक बी. आर. चोपड़ा से परिचित करवाया. फिर क्या था, सफल संगीत का एक लंबा सफर शुरू हो गया। साधना, धूल का फूल, धर्मपुत्र और अन्य निर्माताओं की एक से एक बेहतरीन फिल्मों का संगीत मशहूर हुआ। अपने विविधतापूर्ण मधुर संगीत से सफलता के झंडे गाड़ दिये।

साधना (1958) के सभी गीत साहिर साहब ने लिखे थे। 'संभल ऐ दिल तड़पने...' (रफी-आशा), एक मधुर युगल गीत 'आज क्यूं हमसे परदा है...' (रफी-बलबीर) एक फड़कती हुई कव्वाली, 'कहोजी तुम क्या क्या खरीदोगे...' (लता), मुजरा और सबसे बेहतरीन 'औरत ने जन्म दिया मर्दों को...' (लता) यह दुखिया औरत की दर्द भरी कहानी साहिर साहब ने जितने ऊंचे स्तर की शब्द रचना की थी, उतनी ही सशक्त संगीत रचना एन. दत्ता की थी। इस गीत के लिए साहिर साहिब को सर्वश्रेष्ठ गीतकार का पुरस्कार भी उस वर्ष प्रदान किया गया था।

इसके बाद 1949 की 'धूल का फूल' के गीत एन. दत्ता के संगीतमय सफर में मील का पत्थर साबित हुए। 'तेरे प्यार का आसरा चाहता हूं...' (महेंद्र कपूर-लता), 'धड़कने लगे दिल के', 'झुकती घटा गाती हवा...' (महेंद्र कपूर-आशा भोसले) आदि प्रणय गीत अपनी अलग ही पहचान बन गये थे। इस फिल्म का विषय कुमारी माता की समस्याओं को लेकर था। जब उसका प्रेमी धोखा देकर या मजबूरन दूसरी लड़की से शादी कर लेता है, तब जवानी की उस गलती का एहसास होता है। जब वह अपने प्रियतम को मिलकर अपनी समस्या बताने जाती है, तब उस प्रेमी के घर शादी की धूमधात और उसकी बारात निकल रही है। इस दृश्य के लिए साहिर साहब ने दिल को छू लेने वाली शब्द रचना की थी, जिसके बोल थे-

'दामन में दाग लगा बैठे, हम प्यार में धोखा खा बैठे' इस शब्द रचना पर एन. दत्ता ने बहुत ही असरदार संगीत रचना की थी, और रफी साहब की दर्दभरी आवाज में यह गीत बहुत ही सराहा गया था। 'धूल का फूल' का एक और गीत आज भी देशभक्ति के गीतों में अग्रक्रम में आता है, राष्ट्रीय एकता और संदेशात्मक का कथन करते हुए उस गीत के बोल थे-

'तू हिंदू बनेगा न मुसलमान बनेगा इंसान की औलाद है इंसान बनेगा।'

इस गीत की धुन अपने ही एक गीत 'क्या क्या न सितम तुमने सहे...' (मोहिनी- 1954) पर आधारित थी। यह गीत उतना प्रसिद्ध नहीं हुआ लेकिन यह धुन एन. दत्ता को बहुत पसंद थी, सो इसे 'धूल का फूल' के इस गीत में उपयोग में लाकर एक अजरामर गीत बना दिया।

एन. दत्ता ने 1954 की 'मिलाप' से लेकर 1980 की 'चेहरे पे चेहरा' तक लगभग 54 फिल्मों को संगीतबद्ध किया। इस प्रतिभा सम्पन्न संगीतकार की कुछ रचनाओं पर हम अगर एक नजर डालें, तो उनके संगीत का विविधता से भरा ढंग जान पायेंगे- 'जाते हो तो जाओ पर...' (गीता दत्त-मिलाप), 'हम पंछी एक डाल के...' (रफी साहब का शीर्षक गीत), 'दूसरों का दुखड़ा दूर करनेवाले...' (कवि प्रदीप दशहरा), 'सितारे राह तकते हैं...' (लता), 'मैं तुम्हीं से पूछती हूं...' (रफी, लता ब्लैक कॅट); 'मैं जब भी अकेली होती हूं...' (आशा-धर्मपुत्र); 'भूल सकता है भला कौन...' (महेंद्र कपूर- धर्मपुत्र); 'मौसम सुहाना है दूर कहीं चल' (मुकेश, गीता दत्त- डॉ. शैतान); 'दिल की तमन्ना थी मस्ती में' (रफी, आशा- ग्यारह हजार लड़कियां); 'प्यार का जहां हो...' (किशोर, आशा- जालसाज); 'पीहू पीहू पपीहे न बोल' (लता- हॉलीडे इन बॉम्बे); 'ढूंढे नजर नजर...' (महेंद्र कपूर, आशा, दिल्ली का दादा) 'अश्कों में जो पाया है' (तलत, चांदी की दीवार); 'ईश्वर अल्लाह तेरो नाम...' (रफी, नया रास्ता) और भी दर्जनों गीत, जो भुलाये नहीं बनते।

कव्वाली का भी उनका एक अनोखा अंदाज बड़ा ही लोकप्रिय हुआ था 'आज क्यूं हमसे परदा है' (साधना), 'ये

जो दिल दीवाना मचल गया' (धर्मपुत्र) और 'मेरी तस्वीर लेकर क्या करोगे' (काला समुंदर) ये एन. दत्ताजी द्वारा संगीतबद्ध की गयी कुछ कव्वालियों के उदाहरण हैं। एक देशभक्ति गीत 'सारे जहां से अच्छा, हिंदोस्तां हमारा' अनेक संगीतकारों ने अपने अपने ढंग में ढाला है, जिसमें आशाजी की आवाज में फिल्म 'भाई बहन' (1959) के लिये एन. दत्ताजी की मधुर धुन बहुत सराही गई थी।

वैसे एन. दत्ताजी ने हेमंतकुमार, गीता दत्त, लता, सुधा मल्होत्रा, तलत महमूद, मन्ना डे एवं मुकेश जैसे चोटी की आवाजों को अपने संगीत में प्रस्तुत किया है। लेकिन स्व. मुहम्मद रफी एवं गायिकाओं में आशा भोसले को सर्वाधिक गीत दिये हैं। ये दो आवाजें उनकी पहली पसंद रही हैं।

1960 में उन्हें दिल का दौरा पड़ा। इस लम्बी बीमारी में लगभग एक डेढ़ वर्ष उन्हें आराम करना पड़ा था। इस फिल्मी दुनिया में लंबे समय के लिए अगर कोई कलाकार सामने नहीं आता है, कारण कोई भी हो, लेकिन इस चकाचौंध भरी फिल्मी दुनिया से ओझल होते उसे देर नहीं लगती। यही दु:खद बात एन. दत्ता के साथ भी घटी। हालांकि बीमारी के बाद उन्होंने फिर संगीत देना शुरू तो किया था, लेकिन अब उन्हें दोयम दर्जे की फिल्में मिलने लगीं। इस दूसरी पारी में उनके द्वारा संगीतबद्ध की गयी फिल्म 'नया रास्ता' (1970) में सराहनीय संगीत था।

इसी दौरान उन्होंने कुछ मराठी फिल्मों में अच्छा संगीत दिया था, जिनमें 'अपराध' (1969), 'मधुचन्द्र' (1970) और 'बाळा गाऊ कशी अंगाई' (1977) के गीत लोकप्रिय भी हुए। 'अपराध' और 'बाळा गाऊ कशी अंगाई' के संगीत के लिए सर्वश्रेष्ठ संगीतकार का पुरस्कार भी मिला। महाराष्ट्र सरकार ने उन्हें नागरी पुरस्कार से भी सम्मानित किया। 1980 में प्रदर्शित 'चेहरे पे चेहरा' एन. दत्ता की आखिरी फिल्म थी। उन्होंने इस फिल्म के बाद फिल्म संगीत से सन्यास ले लिया। छब्बीस वर्ष पूर्व 30 दिसंबर 1987 के दिन दिल का दौरा पड़ने से उन्होंने आखिरी सांस ली। बस उनके संगीत के 'बीते दिन याद दिलाते हैं; और उनके संगीत को याद करते हुए उन्हीं के संगीतबद्ध की हुई गीतों की पंक्तियां याद आती हैं ...'भूल सकता है भला कौन...!'

❑❑❑

युवा सन्यासी के सपनों का भारतीय युवक

आलोक भट्टाचार्य

अगले 50 वर्षों के लिए भारत का युवक मंदिर जाना छोड़ दे। भजन-पूजन छोड़ दे। अखाड़े जाकर व्यायाम करे। मजबूत देह तैयार करे। सुपुष्ट शक्तिशाली शरीर प्राप्त करे। पुष्ट शरीर में ही स्वस्थ साहसी हृदय वास करता है। देश को कमजोर, मूर्ख, बिलासी युवकों की जरूरत नहीं। दुबले-पतले दुर्बल शरीर और भीरु मन वाले आत्मविश्वासहीन कायर युवक- जो मंदिरों में जा-जा करताल बजा-बजा लिजलिजे स्वरों में चीख-चीखकर भजन गाते हैं- ऐसे कमजोर युवक भला देश की क्या सेवा करेंगे!

'मुझे कैसा भारतीय युवक चाहिये? जिसका हृदय हिंदुओं की तरह विशाल-उदार हो। जिसका शरीर मुस्लिम पठानों की तरह सुदृढ़ हो। जिसकी बुद्धि पाश्चात्य ईसाइयों की तरह तीक्ष्ण, रचनात्मक और खोजपूर्ण जिज्ञासापूर्ण हो!'- **स्वामी विवेकानंद**

उस वीर सन्यासी ने भीरुता-कायरता की भर्त्सना की। आलस्य को डांटा। संतुष्टि को अनुचित बताया। उन्हें साहसी, मेहनती, जिज्ञासाओं से परिपूर्ण, कुछ कर गुजरने को अधीर, अशांत किंतु दृढ़संकल्पित युवक चाहिये थे। दपदप करते दिमागों और खलबल करते हृदयों वाले जागरूक युवक। देशप्रेमी, मानवप्रेमी, स्वप्नदर्शी और त्यागी युवक!

उन्होंने कहा- 'देश के जन-साधारण को जगाने के लिए देश के तरुण-तरुणियों को ही आगे होना होगा। उन्हें घर से बाहर निकलकर अपने पास-पड़ोसियों, मोहल्लों, गांवों को पहचानना होगा। देश को पहचानना होगा। देश की समस्याओं को जानना होगा। गरीबों असहायों की सेवा करनी होगी।

उन्होंने कहा- संबद्ध होकर समाज सेवा करनी होगी। प्राणीमात्र की सेवा करना ही ईश्वर की सेवा करना है।

उन्होंने कहा- अगले 50 वर्षों के लिए भारत का युवक मंदिर जाना छोड़ दे। भजन-पूजन छोड़ दे। अखाड़े जाकर व्यायाम करे। मजबूत देह तैयार करे। सुपुष्ट शक्तिशाली शरीर प्राप्त करे। पुष्ट शरीर में ही स्वस्थ साहसी हृदय वास करता है। देश को कमजोर, मूर्ख, विलासी युवकों की जरूरत नहीं। दुबले-पतले दुर्बल शरीर और भीरु मन वाले आत्मविश्वासहीन कायर युवक जो मंदिरों में जा-जा करताल बजा-बजा लिजलिजे स्वरों में चीख-चीखकर भजन गाते हैं- ऐसे कमजोर युवक भला देश की क्या सेवा करेंगे! मुझे आत्मविश्वास से पूर्ण साहसी और तगड़े युवक चाहिये।

उन्होंने कहा- न धन चाहिये, न संपत्ति चाहिये। चाहिये चरित्र। उत्तम चरित्र। आदर्श चरित्र। मजबूत चरित्र के बिना जीवन में कुछ भी अच्छा, कुछ भी श्रेष्ठ काम करना संभव नहीं।

उन्होंने कहा- सेवाकार्य और निर्माणकार्य शुरू करने के लिए न किसी विशेष स्थान की जरूरत होती है, न ही किसी विशेष मुहूर्त की। सारे ही मुहूर्त शुभ होते हैं। तुम अपने शुभ कार्यों से समय को शुभ बनाते हो।...जो जहां हो, वहीं से शुरू कर दो।

'गणमान्य, गण्यमान्य, उच्च-पदाधिकारियों और धनपतियों पर कोई भरोसा मत रखना। इन लोगों में जीवनशक्ति नहीं होती। इन्हें एक प्रकार से मृतकल्प ही मानो। मेरा इन पर कोई विश्वास नहीं। मेरा तो नौजवानों, तुम पर विश्वास है। किसी प्रकार की चालाकी चतुराई की जरूरत नहीं। चालाकियों से कुछ नहीं होता। दुखियों के दर्द को महसूस करो।

'हे युवकों, मैं इन गरीबों, अत्याचार-अन्याय-पीड़ितों की पूरी जिम्मेदारी तुम पर सौंपता हूं। कृष्ण ने गोकुल के दीन-दरिद्र गोप-गोपिनियों से दोस्ती की। राम ने गुहक चांडाल को गले से लगाया। भगवान बुद्ध ने राजा का आमंत्रण ठुकराकर एक वेश्या का आमंत्रण स्वीकार किया। नानक ने अमीर सेठ की घी चुपड़ी रोटी अस्वीकार करके

गरीब की सूखी रोटी स्वीकारी। जाओ, उनका साथ दो, उनकी सेवा करो, जिन्हें ईश्वर सबसे ज्यादा प्रेम करते हैं- वे दीन-दरिद्र, असहाय, उत्पीड़ित। जाओ उन्हें गले लगाओ।

तुम्हें किसका भय है? किससे डरते हो तुम? याद रखो, बड़े-बड़े महान काम सिर्फ साहसी लोगों ने ही किये। कायर लोगों ने कभी कुछ नहीं किया। हिम्मत करो। साहसी बनो। मनुष्य एक बार ही मरता है। कायर जितनी बार डरता है, जीते-जी उतनी बार मरता है।

तुम नींद में सोये मत पड़े रहो। सो कर समय व्यर्थ मत गवांओ। अपनी कोशिशों को शिथिल मत पड़ने दो। याद रहे, हमारा उद्देश्य अभी पूरा नहीं हुआ। हमारा लक्ष्य अभी दूर है। शिक्षित युवकों के बीच जाकर काम करो। उन्हें एकत्र करके संबद्ध करो। बड़े-बड़े महान कार्यों के लिए बहुत ज्यादा त्याग की आवश्यकता होती है। स्वार्थ की यहां कोई जरूरत नहीं। नाम की कोई जरूरत नहीं। यश की कोई जरूरत नहीं। तुम्हारी भावनाओं और संकल्पों को साक्षात कार्यों में परिणत करो।

हे वीरहृदय महान युवको, उठो और काम में लग पड़ो। नाम, यश या अन्य किसी भी तुच्छ चीज के लिए पीछे मुड़कर मत देखो। स्वार्थ को तो बिलकुल ही विसर्जित कर दो। कार्य करो। याद रखो- 'तृणैगुणत्वमापत्रैर्वध्यंते मत्तदतिन:'- बहुत सारे तृणों के गुच्छों को एकसाथ करके बनायी गयी रस्सी से मत्त हाथी को भी बांधा जा सकता है। वेद कहता है- 'उत्तिष्ठत: जाग्रत: प्राप्यवरान्नबोधत:'- उठो, जागो, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती, रुको मत।

युवको, जागो! जागो! दीर्घ रजनी बीत गयी, वह देखो प्रभात! दिन का प्रकाश वह देखो। प्रकाश का महातरंग कल्लोल कर रहा है। इसे रोका नहीं जा सकता।

जो कोई चाहे जो कुछ भी बोले, तुम अपनी रौ में आगे आगे बढ़ते जाओ। दुनिया तुम्हारे कदमों तले होगी। चिंता नहीं। कोई कहता इस पर भरोसा रखो, कोई कहता उस पर भरोसा रखो। मैं कहता हूं पहले अपने आप पर तो भरोसा रखो! स्वयं पर विश्वास रखो, सारी शक्तियां तुम्हारी गुलाम हो जायेंगी। अरे, तुम लोग कर क्या रहे हो? सारा जीवन सिर्फ बकवास करके बिता रहे हो! आओ, एक बार इन जापानियों को देख जाओ, और फिर शर्म से अपने चेहरे छिपा लो। भारत की कैसी जराजीर्ण दुर्गति बना रखी है तुमने।

हजार वर्षों के कुसंस्कारों का बोझा सर पर लादे भटक रहे हो। हजार वर्षों से यह मत खाना, वह मत करना, इसे मत छूना उसे मत छूना- इन्हीं सब मूर्खताओं में फंसे हो। इन्हीं व्यर्थ की बातों में शक्ति गवां रहे हो।

पुरोहितों-पुजारियों की मूर्खता के भंवर में फंसकर चक्कर काट रहे हो। सैकड़ों वर्षों के सामाजिक-राजनीतिक अत्याचारों ने तुम्हारी मनुष्यता का नाश कर दिया है। तुम्हारे चरित्र को और व्यक्तित्व को बिलकुल नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। तुम्हारी बुद्धि को कुंद कर दिया है। तुम क्या हो? हो क्या? जरा देखो तो! और तुम कर भी भला क्या रहे हो! मूर्ख, सिर्फ हाथों में पुस्तक लेकर समुद्र किनारे टहल रहे हो। विदेशी दिमागों से निकली किसी नकली बात की जुगाली कर रहे हो। तुम्हारी जान सिर्फ उस तीस रुपट्टी वाली किरानीगिरी में अटकी पड़ी है। या फिर तुम अपनी सारी ताकत एक दुष्ट वकील भर बनने में खर्च कर रहे हो। यही आज भारतीय युवा का सबसे बड़ा सपना है!

याद रख- 'हां, यह मैं कर सकता हूं'- सिर्फ यह कहना भर ही काफी नहीं। तू अगर कर सकता है, मुझे करके दिखा। कितने दिनों का जीवन है आखिर? कितना समय है तेरे पास? संसार में आया है तो जाने से पहले अपनी कुछ निशानी छोड़ जा। वैसे तो पेड़-पौधे-झाड़-झंखाड़ भी पैदा होते हैं, मरते हैं। तुझे भी क्या ऐसे ही पैदा होना-मरना है? तू अगर शिक्षित है, तो मेरे सामने अपने कार्यों से तू इसे साबित कर दिखा। तेरे भीतर अनंत शक्ति है। उस शक्ति को झकझोर कर जगा। मोक्ष क्या होता है? यह मोक्ष-वोक्ष क्या है? ये ध्यान-व्यान-मुक्ति-वुक्ति छोड़। फेंक इन्हें। मैं जिस काम में लगा हूं, उस काम से लग।

मरना तो एक दिन है ही। मर ही जायेगा। तेरे मेरे जैसे कितने ही कीड़े-मकोड़े रोज-रोज पैदा होते-मरते रहते हैं। उस जीवन और वैसी मृत्यु से जगत का क्या आता-जाता है? मरना तो है ही, किसी महान उद्देश्य से मर।

तू ही देश-समाज की आशा है। तुझ ही पर देश-समाज को भरोसा है। तुझसे देश ने कितनी आशाएं लगा रखी हैं। तुझे यों कर्महीन देखकर मुझे बड़ा कष्ट होता है। देर मत कर। मौत हर पल करीब आती जा रही है। समय मत गवां। कमर कस ले। काम से लग। कूद पड़ मैदान में!

❑❑❑

युवा वर्ग : समस्याएं और समाधान

स.वि. लव्हटे
(संयोजक, निरंकारी मराठी साहित्य अवलोकन समिति, मुंबई)

तो क्या इतनी बड़ी युवाशक्ति को यों ही बरबाद होने दिया जाये? हमने पहले ही हजारों वर्षों से दलितों-पिछड़े वर्गों को अस्पृश्यता के नाम पर समाज से अलग-थलग रखकर इनकी विशाल मनुष्य-श्रमशक्ति से देश को वंचित रखा। यही नुकसान हम देश को विराट नारी-शक्ति की प्रतिभा और श्रम से वंचित रखकर भी पहुंचाते रहे। अब यदि इतनी विराट-विपुल युवाशक्ति भी हमारे हाथ से निकल जाये, तो देश का कितना बड़ा नुकसान होगा, देश के विकास को कितनी बड़ी बाधा पहुंचेगी, यह सोचा जा सकता है।

शायर ने कहा है- 'होश की बातें करूंगा होश में आने के बाद।' लेकिन आज के युवा को होश में आने की फुरसत ही कहां? हर वक्त वह किसी न किसी नशे की गिरफ्त में है। उसके चारों तरफ नशे का इतना सामान बिखरा पड़ा है कि हाथ बढ़ाओ तो यह नशा, वह नशा! नशा आज के युवा वर्ग को सहज सुलभ है। सिगरेट और शराब तो हैं ही, एलएसडी, ब्राउन शुगर, चरस, अफीम जैसे ड्रग्स भी हैं। आजकल युवाओं में एक नये ही ड्रग की बड़ी मांग है, नाम है- 'म्याऊ-म्याऊ' या एमडी। इसी की तस्करी के आरोप में मुंबई के मरीन ड्राइव पुलिस स्टेशन का कॉन्स्टेबल धर्मराज कालोखे और महिला तस्कर बेबी पाटनकर पिछले महीने गिरफ्तार हुए। कालोखे इस नशीले पदार्थ का स्टॉक पुलिस स्टेशन के अपने लॉकर में ही रखता था। दोनों ने बताया कि उनके 70 प्रतिशत ग्राहक कॉलेज की छात्र-छात्राएं हैं।

बार असोसिएशन के एक पदाधिकारी गणेश शेट्टी बताते हैं कि बार में बैठकर शराब पीने वालों में आजकल 16 साल के तरुण भी टोलियां बनाकर आते हैं और घंटों बैठकर शराब पीते हैं और साथ में सिगरेट भी लगातार फूंकते रहते हैं। 16-19-20 साल के तरुणों और युवकों में बीयर पीने की लत इन दिनों बहुत ज्यादा बढ़ रही है। बीयर पीने में तरुणियां और युवतियां भी पीछे नहीं हैं। दिनभर में किसी भी समय किसी भी बार के सामने देखेंगे तो 15-20 बाइक्स खड़ी मिल जाती हैं। दिन भर एक बाइक पर कम से कम दो लोग बैठकर आते हैं। कानून तोड़ने के शौकीन ये युवा अक्सर बाइक तीन लोग भी बैठ जाते हैं। यानि किसी भी समय बार में लगभग 50 से 60 युवा शराब पीते हुए देखे जा सकते हैं। शाम को यह संख्या बढ़ जाती है। दिन के 11 बजे से शाम तक जो युवा बारों में शराब पीते हैं, वे ज्यादातर कॉलेज की क्लासेज बंक करके यह मौज-मस्ती करते हैं। इनके गलों में सोने की चेन, कलाइयों में सोने की जंजीर, उंगलियों में तीन-चार अंगूठियां होती हैं। अजीब कपड़े और अजीब हेयर स्टाइल। साधारण बातचीत में भी इनका कोई एक भी वाक्य बिना गालियों के पूरा नहीं होता। इनका हंसी-मजाक भी अश्लील गालियों से भरपूर रहता है। ये बात-बात पर मार-पीट पर उतारू हो जाते हैं।

इन युवाओं से किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी की आशा नहीं की जा सकती। ये सभी परले दर्जे के गैर-जिम्मेदार होते हैं। इन्हें देश-समाज की तो दूर, अपने परिवार तक की फिक्र नहीं होती। देशप्रेम की तो बात ही क्या! इन्हें देश के इतिहास, सभ्यता-संस्कृति की तनिक भी परवाह नहीं। परवाह हो भी कैसे, इन्हें इस सब की जानकारी भी तो नहीं! तो फिर देश की सभ्यता-संस्कृति से इन्हें भला लगाव भी कैसे हो? यह सच है कि देश के इस युवा वर्ग को देश से जरा भी प्रेम नहीं।

ये सभी मैट्रिक पास फेल से लेकर फर्स्ट इयर-सेकंड इयर पास-फेल

तक शिक्षा पाये हुए होते हैं। यानी अर्धशिक्षित। ये किसी भी काम के लायक नहीं होते। इनकी योग्यता शून्य होती है। इन पर कोई जिम्मेदारी नहीं सौंपी जा सकती। 'खाली दिमाग शैतान का घर' वाली नीति के अनुसार ये बैठे-बिठाये खाये-पिये युवा आसानी से अपराध की ओर मुड़ जाते हैं और बिना किसी लाभ या स्वार्थ के सिर्फ शौकिया तौर पर ही छोटे-मोटे अपराध करने लगते हैं। और अंततः शातिर अपराधी बनकर समाज का नुकसान तो करते ही हैं, खुद अपनी भी जिंदगी बरबाद कर लेते हैं।

ऐसा इसलिए कि इनके माता-पिता बेतहाशा धन कमाने, नौकरी-व्यापार-व्यवसाय, क्लब-पार्टी-विलास में इस कदर डूबे रहते हैं कि अपने बच्चों के लिए उनके पास वक्त ही नहीं होता। अतः उन्हें बचपन से कोई आदर्श संस्कार नहीं मिल पाते। कोई दिशानिर्देश नहीं मिलते। अतः पहले संस्कारहीन और धीरे-धीरे कुसंस्काराच्छन्न हो जाते हैं और अंततः दिशाहीन हो जाते हैं। इनके जीवन में प्रेम-स्नेह-सेवा त्याग करुणा जैसी सकारात्मक-रचनात्मक प्रवृत्तियों के लिए कोई जगह ही नहीं बचती।

तो क्या इतनी बड़ी युवाशक्ति को यों ही बरबाद होने दिया जाये? हमने पहले ही हजारों वर्षों से दलितों-पिछड़े वर्गों को अस्पृश्यता के नाम पर समाज से अलग-थलग रखकर इनकी विशाल मनुष्य-श्रमशक्ति से देश को वंचित रखा। यही नुकसान हम देश को विराट नारी शक्ति की प्रतिभा और श्रम से वंचित रखकर भी पहुंचाते रहे। अब यदि इतनी विराट-विपुल युवाशक्ति भी हमारे हाथ से निकल जाये, तो देश का कितना बड़ा नुकसान होगा, देश के विकास को कितनी बड़ी बाधा पहुंचेगी, यह सोचा जा सकता है।

संस्कार और दिशा के अभाव में तथा नशे के प्रभाव से बरबाद हो रही इस युवाशक्ति को कैसे बचाया जाये? इस भारी शक्ति का रुख सकारात्मक-रचनात्मक प्रवृत्तियों की ओर कैसे मोड़ा जाये? इस विपुल शक्ति को देश के विकास में किस प्रकार नियोजित किया जाये?

संस्कारहीनता, दिशाहीनता, कर्महीनता, नशा और इन सबके अनिवार्य परिणाम के तौर पर हताशा, निराशा...फलतः अपराध-प्रवणता...और अंततः आत्महत्या! अकारण नहीं कि पिछले कुछ वर्षों में युवाओं में आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ी है। स्कूल-कॉलेज की छात्र-छात्राओं में आत्महत्या की संख्या बढ़ी है।

हमें इन्हें बचाना होगा। इनमें अच्छे संस्कार रोपने होंगे। इन्हें सही राह बतानी होगी। जरूरत है कि इन युवाओं के कलात्मक विकास की कोशिशें की जाये। इनमें छिपी प्रतिभाओं को पहचानकर उन्हें सामने लाया जाये। इनकी योग्यताओं और रुचियों को ढूंढ-पहचानकर उनका उचित मूल्यांकन किया जाये और उन्हें बढ़ावा दिया जाये। इनके मानसिक-हार्दिक घावों पर मलहम-मरहम लगाया जाये। इनमें से कई हैं जो अपने ही माता-पिता से उपेक्षा और अवहेलना और प्रताड़ना के शिकार हैं। उनके दर्दों को समझा-सहलाया जाये। इन्हें सीधे एकदम से नैतिकता नहीं समझायी जा सकती। अध्यात्म और धर्म तो बहुत दूर। पहले इन्हें स्नेह देना होगा। इनके पास जाना होगा। इनकी बात समझनी होगी। इनका विश्वास जीतना होगा। तब इन्हें समाज-देश समझाना होगा। नैतिकता बतानी होगी। आशा की बात है कि देश में कई संस्थाएं और सामाजिक संगठन अपनी जिम्मेदारी समझ कर युवाओं की मदद के लिए आगे आकर कार्य कर रही हैं। वे युवाओं को नैतिक समर्थन देकर उनका आत्मविश्वास बढ़ाकर, उनकी कोमल भावनाओं को जगाकर उन्हें इंसानियत के पथ पर लाकर उन्हें समाजसेवा के कार्यों में लगा रही है।

ऐसी बड़ी और विश्वस्तरीय संस्थाओं में आध्यात्मिक जगत से जुड़ी एक महत्वपूर्ण संस्था है 'संत निरंकारी मिशन'। सद्गुरु बाबा हरदेवजी महाराज के दिशानिर्देशों पर कार्यरत यह संस्था युवकों में नैतिकता के विकास के लिए कई प्रकार के रचनात्मक कार्यक्रम करती रहती है।

बाबा हरदेवजी महाराज युवकों को बताते हैं कि मानव सेवा ही धर्म है। सेवाधर्म के लिए युवकों को वह अहंकार त्यागने की प्रेरणा देते हैं। उनमें विनम्रता और सेवाभाव निर्मित करते हैं। एक-दूसरे का सम्मान करने की शिक्षा देते हैं। देश-विदेश में फैले सद्गुरु महाराज के करोड़ों शिष्य इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर अनूठा सेवाकार्य कर रहे हैं। निरंकारी मिशन के ये युवा मन-वचन-कर्म से एक हैं। स्वयं आदर्श और सुंदर जीवन जी रहे हैं और दूसरों को भी ऐसी ही प्रेरणा दे रहे हैं।

❑❑❑

विवेकानंद जैसा कोई नहीं

चंद्रकांत खोत

हिंदू धर्म संस्कृति का लोहा मनवानेवाला एक युवा संन्यासी ऐसे दौर में भारत की पताका विश्व में लहराता है जब हमारा देश अंग्रेजों की गुलामी झेल रहा था। बस सौ-डेढ़ सौ साल पहले की तो यह बात है जब विवेकानंद मात्र 39 वर्ष, 5 महीने और 22 दिनों के जीवन में इतिहास रचकर, अंतरराष्ट्रीय संत और राष्ट्रपुरुष बनकर इस जहां को अलविदा कह देते हैं।

विवेकानंद की यादशक्ति बड़ी अच्छी थी। संगीत का उन्हें अच्छा ज्ञान था और उनका गला बड़ा सुरीला था। संगीत का उन्होंने बाकायदा प्रशिक्षण लिया था। वेणीमाधव अधिकारी और उत्साद अहमद खां उनके संगीत के गुरु थे। सितार, पखावज और तबला के वे अच्छे वादक थे। पंद्रह वर्ष की उम्र में संगीत पर आधारित उनकी पहली पुस्तक 'संगीत कल्पतरु' प्रकाशित हुई थी। बचपन में वह बड़े शरारती थे। उनके बचपन का नाम नरेंद्र था। मूर्तिपूजा में विश्वास न करनेवाला यह ब्रह्मसमाजी युवक छह वर्षों तक अपने गुरु श्री रामकृष्ण के साथ साकार और निराकार को लेकर लड़ता रहा। परेशान होकर एक बार श्री रामकृष्ण ने नरेंद्र से कहा, "जब तुम मेरी काली मां को नहीं मानते हो तो यहां क्यों आते हो?" नरेंद्र ने जवाब दिया, "क्या यह जरूरी है कि दक्षिणेश्वर आनेवाला हर कोई काली माता को मानता हो? मैं तो आपके लिए आता हूं, आपको चाहता हूं।" यही नरेंद्र भगवा वस्त्र धारण करके एक दिन संन्यासी बन जाता है और मूर्तिपूजा में विश्वास करने लगता है, काली माता को अपनी मां मानने लगता है। संन्यासी बनने के बाद पूरे भारत का भ्रमण करते हुए देश की स्थिति को जानने का प्रयत्न करता है। देश-विदेश के भ्रमणकाल में विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए आर्थिक तंगी, द्वेष, वर्णभेद एवं हीनता को झेलते हुए भारतवर्ष और भारतीय संस्कृति का नारा पूरे विश्व में बुलंद करता है। अमेरिका में आयोजित अंतरराष्ट्रीय 'सर्वधर्मपरिषद्' में विवेकानंद महानायक बनकर उभरते हैं। हिंदू-धर्म संस्कृति का लोहा मनवानेवाला एक युवा संन्यासी ऐसे दौर में भारत की पताका विश्व में लहराता है जब हमारा देश अंग्रेजों की गुलामी झेल रहा था। बस सौ-डेढ़ सौ साल पहले की तो यह बात है जब विवेकानंद मात्र 39 वर्ष, 5 महीने और 22 दिनों के जीवन में इतिहास रचकर, अंतरराष्ट्रीय संत और राष्ट्रपुरुष बनकर इस जहां को अलविदा कह देते हैं। किसी ने इस आत्मा को 'विरेश्वर' कहा, किसी ने 'बिरले' तो किसी ने 'नरेंद्र' (नोरेन), किसी ने 'विविदिषानंद', किसी ने 'सच्चिदानंद' तो किसी ने 'विवेकानंद'...।

गुरु श्री रामकृष्णजी के आध्यात्मिक चिंतन के बीजकणों को सारे संसार में वितरित करने का भार स्वामी विवेकानंद के कंधों पर आ पड़ा। यह शारीरिक और नैतिक- दोनों दृष्टियों से गुरू से सर्वथा

भिन्न थे। परमहंस का पूरा जीवन देवी मां काली के चरणों में बीता। शैशव काल से ही वह देवी को समर्पित हो गये थे। आत्मचेतना से भी पहले उनमें यह चेतना जाग गयी थी कि देवी उनकी अनन्य प्रेयसी हैं। विवेकानंद का पुष्ट शरीर भी रामकृष्ण के कृश-कोमल यद्यपि सुगठित शरीर से भिन्न था। लंबा शरीर, चौड़े कंधे, भरी छाती, सुडौल पृष्ठ, व्यायाम की अभ्यस्त भुजाएं, रंग गेहुआ, चेहरा गोल और तेजस्वी था। माथा प्रशस्त और जबड़ा दृढ़ था। सुंदर सुडौल और कुछ उभरी हुई आंखें, भारी पलकें, नजर जादुई और पहली नजर में ही आंखों में भर जानेवाला उनका व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक था। उनमें राजस भाव कूट-कूटकर भरा था, पर यह करुणा के स्वामी थे।

कोलकाता विश्वविद्यालय के स्नातक, ओजस्वी वाणी, प्रखर वक्ता, उत्कृष्ट पत्र लेखक, वाक्यपटुता में महारत, साहित्यकार, गायक, वादक, पाककला में निपुण, अच्छी याददाश्त, विद्वान पंडित, अविवाहत स्वामी विवेकानंद का जन्म सन् 1863 में 12 जनवरी को अर्थात् पौष मास कृष्ण सप्तमी के दिन सूर्योदय के पूर्व 6 बजकर 33 मिनट 33 सेकंड पर कोलकाता के शिमुलिया मोहल्ले में दत्त परिवार के विशाल भवन में हुआ था। वह एक अभिजात क्षत्रिय कुल (कायस्थ) की संतान थे। उनके सारे जीवन पर क्षात्र-धर्म की छाप है। उनकी माता भुवनेश्वरी देवी शिक्षित एवं पुराने विचारों की भोली-भाली शालीनता सम्पन्न हिंदू नारी थी। पिता विश्वनाथ दत्त शहर के नामी वकील, जागीरदार-सा स्वच्छंद जीवन और रईसी मिजाज के थे। उनके दादा एवं परदादा भी हाईकोर्ट के वकील थे। आगे चलकर दादा दुर्गाचरणजी ने संन्यास ले लिया था। विवेकानंद द्वारा संन्यासी जीवन अपनाना इसी परंपरा की कड़ी मानी जाती है। विवेकानंद से बड़ी उनकी दो बहने भी थीं। नरेंद्र को स्वामी विवेकानंद बनानेवाले गुरु श्रीरामकृष्ण परमहंस गुरुओं के महागुरु थे। स्वामीजी उन्हें ठाकुर जी के नाम से संबोधित करते थे तो ठाकुर जी अक्सर पूछा करते, 'आमार कोथाय? आमार नोरेन कोथाय?' (मेरा नरेंद्र कहाँ है?)

विरोधाभासी होते हुए भी गुरु-शिष्य की यह जोड़ी अद्‌भुत थी। गुरु विवाहित तो शिष्य ब्रह्मचारी, गुरु निरक्षर तो शिष्य स्नातक, गुरु ब्राह्मण तो शिष्य अभिजात क्षत्रिय, गुरु गरीब तो शिष्य सम्भ्रांत परिवार से, गुरु मूर्तिपूजक तो शिष्य निर्गुण निराकारी, गुरु शाकाहारी तो शिष्य सर्वाहारी, गुरु कोलकाता तक सीमित रहे तो शिष्य पूरे भारत और विश्व के कई राष्ट्रों का भ्रमण करते हुए अपनी ओजस्वी वाणी से गुरु की महिमा और भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करते रहे।

विवेकानंद को जो भी कहना होता उसे बड़ी निर्भीकता से बिना किसी लाग लपेट के कहते। उन्होंने पूरे विश्व को बताया कि वेदों एवं धर्म-ग्रंथों के अध्ययन का अधिकार समाज के हर वर्ग को है। उन्होंने डंके की चोट पर इस बात का ऐलान किया कि बिना धर्मांतर के किसी भी पंथ-संप्रदाय का व्यक्ति वेदांती हो सकता है। पूरे मानव मात्र को उन्होंने आह्वान किया- उठो, जागो और लक्ष्य सिद्ध करो। सभी के अंतर्मन में परब्रह्म का निवास है, अत: कोई भी असहाय नहीं है। जो असमर्थ है, दीन-हीन हो गया है, उसकी सहायता करो, यही न्यायोचित और तर्कसंगत होगा। अस्पृश्यता का राग अलापनेवालों को पीठ पर झाड़ू से मारने की बात उन्होंने बड़ी बेबाकी से कही। जिन विदेशियों के छल-कपट के कारण आज मेरा देश दीन-हीन हो गया है, उसी गुलाम देश का मैं प्रतिनिधित्व कर रहा हूं, उसी गुलाम देश में मेरा जन्म हुआ है और मुझे अपने देश पर गर्व है- यह उन्होंने अमेरिका की 'सर्वधर्मपरिषद्' में लाखों की भीड़ में कही थी। अमेरिका की 'सर्वधर्मपरिषद्' में जिस तरह से विवेकानंद की वाणी गूंजती रही और लोगों को बुनियादी सच सोचने पर मजबूर करती रही, यह वाणी इस बात का आगाज कर रही थी कि एक दिन हिन्दुस्तान पूरे विश्व में महासत्ता बनकर उभरेगा।

जिस इंग्लैंड से वह घृणा करते थे, उसी इंग्लैंड ने उन्हें निवेदिता जैसी शिष्या दी जो अन्त तक परछाई की तरह उनका साथ निभाती रहीं। कोलकाता में प्रथम बालिका विद्यालय की स्थापना इसी सिस्टर निवेदिता ने की थी। विदेश से आये शिष्य सेवियर दंपती ने हिमालय के मायावती नामक स्थान पर 'अद्वैत आश्रम' की स्थापना की और आजीवन वेद-वेदांत एवं स्वामीजी के विचारों का प्रचार-प्रसार करते रहे। मिस मेरी हेल

जैसी शिष्या ने रामकृष्ण मठ की जमीन खरीदने के लिए काफी पैसे दिये थे। स्वामीजी का लेखनिक (आशुलिपिक) एक विदेशी था- गुडविन, जिसे स्वामीजी अपना दाहिना हाथ मानते थे। उद्योगपति जमशेदजी टाटा उन्हें अपने 'संशोधन संस्थान' की जिम्मेदारी सौंपना चाहते थे, पर अस्वस्थता के चलते वे इसे स्वीकार नहीं कर सके थे। इसका स्वामीजी को बड़ा खेद रहा। वेद-वेदांत की शिक्षा को समर्पित एक विश्वविद्यालय की स्थापना इस देश में वह करना चाहते थे पर उनका यह सपना पूरा न हो सका। इस कार्य के लिए उन्हें राष्ट्रीय कांग्रेस से बड़ी अपेक्षा थी। महिलाओं के लिए अलग से मठ की व्यवस्था हो, यह इच्छा भी उनकी अधूरी रह गयी। स्वामीजी को पत्र लिखने का बड़ा शौक था। अपने जीवन में उन्होंने हजारों पत्र लिखे, जिसमें से अधिकांश पत्र उन्होंने मिस मेरी हेल को लिखे। अपने गुरु 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की और आजीवन उनके विचारों से लोगों को तृप्त करते रहे।

कोलकाता विश्वविद्यालय का वह स्नातक युवक अपनी युवावस्था में ही श्री रामकृष्ण के सान्निध्य में आया, भगवा वस्त्र धारण किया और संन्यासी बन गया। संन्यासी वह अपने मोक्ष के लिए नहीं बना, बल्कि दीन-दुखियों और पीड़ितों के लिए छटपटाता रहा। सिर्फ छटपटाता ही नहीं रहा, बल्कि वह अपने गुरुबंधुओं की सहायता से 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना करते हुए प्रत्यक्ष रूप से लड़ाई में उतरा, सेवा और परोपकार की इस लड़ाई में शामिल हुआ।

श्री रामकृष्ण और विवेकानंद- ये एक-दूसरे के आमने-सामने रखे साफ-सुथरे स्वच्छ दो आइने नहीं हैं तो क्या हैं? या फिर एक-दूसरे के समक्ष दो दीप हैं। किस दीप से कौन-सा दीप प्रज्वलित हो रहा है, यह कहना मुश्किल हो जाये, कुछ ऐसी स्थिति बनती है।

विवेकानंद को जो कुछ भी कहना था वह साफ-साफ कह दिया करते, बिना किसी भेद-भाव के और बड़ी निर्भीकता से- 'हमारे वेदों में, किसी एक में भी ऐसा नहीं लिखा गया है कि वेदाध्ययन का अधिकार सभी को नहीं है। क्या इस वाक्य को कोई दिखा पाएगा?' इस तरह का प्रश्न खुले-आम पूछनेवाले सिर्फ विवेकानंद ही थे।

'धर्म-अधर्म की बात यदि यहां करना है तो सर्वप्रथम इस देश के लोगों को गरीबी और पेट की समस्या का समाधान करना होगा। इस समस्या का निदान खोजना होगा।' इस तरह का आह्वान करनेवाला कोई और नहीं, विवेकानंद ही थे।

'धर्मांतरण किये बगैर किसी भी पन्थ सम्प्रदाय का व्यक्ति वेदांती हो सकता है।' इस तरह की वेद-वाणी कहनेवाला कोई और नहीं, विवेकानंद ही थे।

'पहले के देवी-देवता अब कुछ पुराने हो गये हैं। अब हमें नया हिंदुस्तान, नये देवी-देवता, नया वेद, नया धर्म बनाना है।' इस तरह का साहस करनेवाला कोई और नहीं, विवेकानंद ही थे।

'अरे रे! इन दीन-दुखियों और गरीबों की चिंता अब हमारे देश के लोग नहीं कर रहे हैं...जिनके अथक परिश्रम से देश में अन्न पैदा होता है, जिन मेहतर और भंगियों के कारण शहर स्वच्छ होता है, यदि वे एक दिन काम बंद कर देते हैं तो शहरों में हाहाकार मच जाता है। इनके दुखों को कम करने वाला कोई जन्म क्यों नहीं ले रहा है इस देश में? दिन-रात हम सिर्फ चिल्लाते रहते हैं- छूना नहीं...हमें छूना नहीं...छूत ...छूत...अछूता इस देश में अब दया धर्म नहीं बचा है।

'छूना नहीं' कहने वालों की तूती बोल रही है इस समय अरे, 'हमें मत छूना' कहनेवालों की पीठ पर कोई झाड़ू क्यों नहीं मारता, लात-घूसों से उन्हें कोई अधमरा क्यों नहीं कर देता...?

'विदेशियों के छल-कपट के कारण जो लोग कंगाल हुए, उन्हें अपना देश छोड़ना पड़ा, ऐसे सभी जाति-धर्मों के निराश्रितों को जिस जाति ने सदैव सहारा दिया, आश्रय दिया, मेरा जन्म उसी जाति में है, मैं उसी देश का वासी हूं, इस बात का मुझे अभिमान है।' यह कहते हुए जिसकी छाती तन जाती, वह कोई और नहीं विवेकानंद ही थे। देश ही नहीं विदेशों में भी यह वाणी गूंजती रही।

(बिंब प्रतिबिंब से)

❑❑❑

करूणा में भीगा वह राजसी भाव

रोमां रोलां
(विश्वप्रसिद्ध फ्रेंच दार्शनिक-चिंतक-लेखक, भारतीय संस्कृति-सभ्यता के प्रशंसक)

"सबसे पहले बलवान और पुरुषार्थी बनो। मैं उस दुष्ट का भी सम्मान करता हूं जो बलवान है, और पुरुषार्थी, क्योंकि उसकी शक्ति उसे किसी दिन दुष्टता को, स्वार्थी कर्म को त्याग करने को बाध्य करेगी और अंततः उसे सत्य तक पहुंचा देगी।"

वह महान शिष्य जिसने रामकृष्ण परमहंस की विरासत को पाया और उनके विचारों के बीजकणों को सारे संसार में बिखेरा, वह शारीरिक और नैतिक दोनों ही दृष्टियों से उनसे, यानी अपने गुरु से सर्वथा भिन्न था।

दिव्य गुरु ने अपना सारा जीवन देवी मां भगवती के चरणों में बिताया था। वह शैशव से ही देवी को समर्पित थे। आत्म-चेतना जागृत होने से पहले ही उन्हें इसकी चेतना थी कि वह देवी मां के प्रेमी हैं। उसे पुनः प्राप्त करने के लिए उन्हें एक वीर योद्धा की भांति सालों कष्ट झेलने थे। इस परीक्षा का उद्देश्य उन्हें पवित्र और अपने दिव्य प्रेम के योग्य बनाना था। जंगल की असंख्य समस्त पगडंडियों का वह देवी एकमात्र लक्ष्य थी- हजारों चेहरों और अनेक देवी देवताओं में उसी का ही एक चेहरा था। और जब वह उस तक पहुंचे, तब वह उन सब चेहरों को पहचान सके और वे उनसे प्रेम करने लगे, उसके माध्यम से उन्होंने समस्त विश्व को अपनी बांहों में बांध लिया। उनका शेष जीवन विश्वव्यापी आनंद की इस शांत संपूर्णता में बीता। पश्चिम के लिए इस प्रकटन को बीथोवन और शीलर ने गाया है।

परमहंस ने इस आनंद को हमारे नायकों से अधिक पूर्णता से अनुभव किया। बीथोवन के लिए आनंद चकराते बादलों की घटा की एक नील चमक थी, जबकि परमहंस विक्षुब्ध परदे को पार कर चिरंतनत्व के नील सरोवर में अपने विशाल शुभ्र पंख फैला विश्राम कर रहे थे।

उनके महानतम शिष्यों में कोई ऐसा न था जो उनका मुकाबला कर सकता। उनमें सर्वश्रेष्ठ विवेकानंद ही कभी-कभार तूफानों के बीच उड़ानें भर उस ऊंचाई तक पहुंच पाते थे, जो मुझे बारंबार बीथोवन का स्मरण कराते हैं। सरोवर के ऊपर विश्राम करते हुए भी उनकी नौका की पाल हर हवा से भरी रहती थी। धरती की चीखें, युगों के कष्ट, सागर के भूखे पक्षियों की तरह उनके सर पर मंडराते थे। वह मूर्तिमान ऊर्जा थे। मानव के लिए कर्म ही उनका संदेश था। उनके सिंह-हृदय में शक्ति का तूफान हिलोरें मारता। बीथोवन की भांति उनके लिए भी यही अच्छाइयों का मूल था। उन्हें निष्क्रियता से, जिसके जुए का भार पूर्व के धैर्यवान बैलों के कंधों पर इतना भारी है, प्रबल घृणा थी। तभी उन्होंने कहा, "सबसे पहले बलवान और पुरुषार्थी बनो। मैं उस दुष्ट का भी सम्मान करता हूं जो बलवान है, और पुरुषार्थी, क्योंकि उसकी शक्ति उसे किसी दिन दुष्टता को, स्वार्थी कर्म को त्याग करने को बाध्य करेगी और अंततः उसे सत्य तक पहुंचा देगी।"

विवेदानंद का बलिष्ठ शरीर के सुकुमार- यद्यपि गठे बदन से सर्वथा भिन्न था। लंबा डील (पांच फूट साढ़े आठ इंच), चौकोर कंधे, चौड़ी छाती, पुष्ट और कुछ भारी उनकी भुजाएं सुडौल और व्यायाम की अभ्यस्त थीं। रंग गेहुंआ, चेहरा भरा हुआ, चौड़ा माथा

और दृढ़ जबड़े थे; बड़ी काली उभरी हुई भारी पलकों वाली भव्य आंखें थीं जो कमल की पंखुड़ी की उपमा की याद दिलाती थीं। उनकी नजर के जादू से कुछ नहीं छिपता। उसका दुर्निवार आकर्षण, उसकी बौद्धिकता, विनोदप्रियता या करुण आनंद में खो जाने की क्षमता और चेतना की गहराई तक डूबना और आक्रोश से मुरझाना, उतना ही व्यापक था। विवेकानंद का प्रमुख गुण उनका राजसी भाव था। वह जन्मजात राजा थे और भारत और अमरिका में जो भी व्यक्ति उनके संपर्क में आया उसने उनके सामने मस्तक नवाया। तीस वर्ष का वह नवयुवक जब सितंबर 1893 में कार्डिनल गिब्स द्वारा उद्घाटित शिकागो में सर्वधर्म सम्मेलन में प्रकट हुआ, तब उसके भव्य व्यक्तित्व के सामने अन्य सब प्रतिनिधि भुला दिये गये। अमरीकी एंग्लो-सैक्सन श्रोताओं का बृहत् समूह जो उनके रंग के कारण उनके प्रतिकूल था, उनके पुष्ट और सुन्दर शरीर, उनकी प्रभावशाली आकृति, उनकी भव्य भंगिमा, उनकी काली आंखों की चमक से उनके भाषण से शुरू होते ही उनकी गहरी समृद्ध आवाज के शानदार संगीत में बह गया। भारत के इस क्षत्रिय प्रवक्ता ने अमरीका की विचारधारा पर गहरी छाप छोड़ी।

किसी भी प्रसंग में उनके द्वितीय स्थान पर होने की कल्पना असंभव थी। जहां कहीं वह गये, उन्हें प्रथम स्थान मिलता। उनके गुरु रामकृष्ण स्वयं को एक स्वप्न में एक महान ऋषि के सम्मुख एक प्रिय शिशु की तरह देखा था। विवाकानंद स्वयं इस सम्मान को स्वीकार नहीं करते थे, अपनी बड़ी आलोचना करते और अपने को अपमानित करते। फिर भी पहली नजर में ही प्रत्येक व्यक्ति उन्हें नेता, भगवान द्वारा अभिषिक्त, आदेश देने का अधिकारी मान लेता। हिमालय में एक अपरिचित यात्री उन्हें देखकर आशर्य से बोल उठा था, 'शिव'। ऐसा लगता था मानों उनके इष्ट देवता ने उनका नाम उनके मस्तिष्क पर अंकित कर दिया हो।

किन्तु यह मस्तिष्क अंतरआत्मा के झंझावात के थपेड़ों से गढ़ी गयी एक चट्टान थी। वह बहुत कम ही उस शांत वायु और स्पष्ट चिंतन को पाते रामकृष्ण की मुस्कराहट जहां मंडराती। उनका अति बलिष्ठ शरीर और विपुल मेधा, उनकी तूफानी आत्मा की पूर्व-निर्धारित युद्ध भूमि थे। वर्तमान और अतीत, पूर्व और पाश्चात्य, स्वप्न और कर्म के आधिपत्य के लिए संघर्ष कर रहे थे। वह जानते थे कि यदि वह अपने स्वभाव एवं सत्य के एक अंश को त्याग सकने में समर्थ होते तो वह बहुत कुछ समन्वय स्थापित कर सकते थे। इन महान विरोधी शक्तियों के बीच समन्वय स्थापित करने में उन्हें वर्षों लगे; इसी में उनका साहस और जीवन आहुति बन गया। संग्राम और जीवन उनके लिए पर्यायवाची थे। उन्हें थोड़े ही दिन जीना था। रामकृष्ण और उनके महान शिष्य की मृत्यु के बीच सोलह वर्ष का अंतराल है...भीषण संघर्ष और ज्वालाओं में गुजरे वर्ष ...वह अभी चालीस वर्ष के भी न हुए थे कि वह बलिष्ठ शरीर चिता पर रख दिया गया। किंतु इस चिता की ज्वाला अभी भी धधक रही है। पौराणिक भृंगराज की भांति उसकी राख से भारत की नयी चेतना का जन्म हुआ है- भारत का अपनी एकता और अपने महान संदेश में विश्वास जागा है जिसका मनन चिंतन इस प्राचीन जाति की स्वप्निल आत्मा वैदिक युग से करती आ रही है- यह वह संदेश है जो उसे शेष मानव जाति को सौंप देना है।

(लेखक की पुस्तक 'विवेकानंद की जीवनी' से)

❑❑❑

कहानी-

डॉ. दामोदर खडसे

- **मराठी साहित्यकार हैं जो मराठी पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद करने के लिए प्रसिद्ध हैं।**
- **इन्होंने हिंदी के माध्यम से कंप्यूटर एवं बैंकिंग के प्रशिक्षण को सुगम बनाने के लिए हिंदी को एक व्यापकता प्रदान की है।**
- **हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु अखिल भारतीय स्तर पर डॉक्टर दामोदर खडसे ने बैंकिंग एवं तकनीकी शब्दावली का निर्माण किया।**
- **सृजनात्मक स्तर पर इन्होंने उपन्यास लेखन और साहित्य अकादमी के लिए मराठी से हिंदी में महत्वपूर्ण रचनाओं का अनुवाद भी किया।**
- **वे महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी के कार्याध्यक्ष रहे हैं।**

छड़ी

वह फिर दिखाई दिया। उसके कान्धे पर छड़ियों का एक बड़ा गट्ठा था। वह झुका-सा लग रहा था, घर जाने का उसका समय अभी हुआ नहीं है। हालांकि अब आठ बजने वाले थे- रात के। कुछ बूंदाबांदी होने वाली थी। सैलानी कुछ खरीदारी तो कर रहे थे, पर संख्या बहुत कम थी। क्यों न कम हो, अब मौसम जो खत्म हो चला था। जो धुँआधार बारिश देखना चाहते थे, वे लोग ही महाबलेश्वर आए हुए थे। अनय ने जब उसे तीसरी या चौथी बार देखा तो ठिठक गया। वह भी अनय को अजीब निगाहों से ताक रहा था। अनय को बेटी ने गुड़ियों की दुकान में खींच लिया।

अनय का मन दुकान में नहीं लग रहा था। वह बार-बार मुड़कर बाहर झांकना चाहता और बेटी सिमरन मुड़कर कोई गुड़िया उठाकर पापा की ओर देखती।

"पापा, मुझे ये गुड़िया चाहिए।"

"बेटे, मम्मी से कहकर ले ले..."

"पापा कैसी है गुड़िया?"

"अच्छी है बेटे, तुझे पसन्द है ...ले ले..."

मम्मी जूट की एक बैग पसन्द करने में लगी थी। वह सिमरन की गुड़िया पर ध्यान नहीं दे पायी। सिमरन का भाई बारह साल का है। बहन की पसन्द पर उसकी मुहर लग गयी और सिमरन अपनी गुड़िया के साथ फुदकने लगी।

अनय दुकान में बेमन से खड़ा था। इधर-उधर किसी को तलाशता। परन्तु वह दुकान के भीतर क्यों मिलता? उसे याद आया कि 'सनसेट प्वाइंट' पर वह अधेड़ आदमी बुढ़ापे की ओर झुक गया था। वह अपनी छड़ियाँ बेचना चाहता था। शायद आज एक भी छड़ी नहीं बिकी।

"बाबूजी, ले लीजिए, बहुत बढ़िया है और एकदम किफायती..."

"मुझे नहीं चाहिए..." अनय आगे बढ़ गया। परन्तु वह पीछा करता रहा, "साहब, केवल एक सौ बीस में...इतनी सस्ती और मजबूत छड़ी आपको कहीं नहीं मिलेगी।"

अनय आगे बढ़ने लगा तो वह पीछे-पीछे चलने लगा, "साहब, दस रुपये कम दे देना..."

कुछ दूर तो वह पीछे-पीछे चला, पर जब उसे लगा कि ये साहब छड़ी नहीं खरीदेंगे तो पता नहीं कब वह नए ग्राहक की तलाश में पीछे मुड़ गया।

अनय ने पीछे मुड़कर देखा, पर वह भीड़ में कहीं खो गया था।

'सनसेट प्वाइंट' पर भीड़ बढ़

रही थी। युवा सैलानी आगे बढ़न की होड़ में। जुलाई में 'सनसेट प्वाइंट' पर इतनी भीड़ नहीं होती पर पिछले चार दिनों से बारिश नहीं हुई थी, इसलिए भीड़ यहाँ आ गई थी।

वह भीड़ के बीच अपने ग्राहक तलाश रहा था। फिर उसने दिशा बदली और बस स्टॉप की ओर बढ़ा। कुछ उम्रदराज लोग अपनी गाड़ियों में ही बैठे थे...अनय बच्चों के लिए पानी की बोतल लेने गया था। बोतल लेकर जैसे ही पीछे मुड़ा, फिर वही आदमी छड़ी लेकर आगे आया, "साहब सौ रुपये दे देना। बिलकुल खरीद भाव में..."

अनय ने एकबारगी उसे देखा और आगे बढ़ गया। सिमरन और सारंग प्यासे होंगे...सिमरन पानी पीने लगी। सूर्यास्त का समय था। सारंग अपनी मां के साथ खड़ा था। अनय के सामने पन्द्रह साल पुराना समय पलक झपकते ही उभर आया।

इसी प्वाइंट पर वह नयी नवेली पत्नी श्वेता के साथ खड़ा था। सूर्यास्त के समय इस प्वाइंट तक पहुँचने की फिराक में वह टैक्सीवाले पर कितना बरसा था और टैक्सीवाले ने भी पूरी शिद्दत से ड्राइव कर सही समय पर यहाँ पहुँचाया था। कितना खुश था वह। सूर्यास्त देखने के सही समय पर श्वेता को ला सका वह। अपने कैमरे से वह सूर्यास्त को 'क्लिक' करता रहा। श्वेता के फोटो भी अलग-अलग ऐंगल से खींचता रहा। फिर श्वेता का हाथ थामकर तब तक एकाग्र खड़ा रहा जब तक सूर्य पूरी तरह डूब नहीं गया। बीच-बीच में श्वेता को निहार लेता। श्वेता से नजर मिलते ही उसकी आँखों में एक दुनिया उभर आती। दूर पहाड़ियों के चारों ओर लाली ही लाली थी। वह पता नहीं कब तक श्वेता के साथ खड़ा था। उसे लग रहा था सूरज की सारी ऊष्मा श्वेता की हथेलियों में उतर आई है और वह अपने आपको बहुत सुरक्षित और सुख से लबरेज महसूस कर रहा था।

एक छड़ीवाला उसके सामने से गुजरा। वह छड़ियों की ओर देखता रहा... "चालीस रुपये...चालीस रुपये..." चिल्लाता हुआ छड़ीवाला गुजर गया। छड़ीवाले ने अनय और श्वेता की ओर ऐसे देखा जैसे वे इसके ग्राहक हो ही नहीं सकते... वह चिल्लाता रहा... "चालीस रुपए...चालीस रुपए..."

अनय आँखों ही आँखों में एक छड़ी तय कर चुका था। बाबूजी का खयाल उसका पीछा कर रहा था। वह छड़ीवाले को पुकारने को हुआ। फिर एक व्यवहारिक खयाल ने उसे रोक दिया, 'आखिरी दिन ले लेंगे, अभी से कौन संभालेगा।' श्वेता ने गुमसुम पति को भरपूर निहारा और अपनी खास अदा में एक मुसकान बिखेरी। अनय का हाथ हथेली से छिटककर सिर पर एक हल्की-सी चपत के रुप में टपका और कान्धे पर आकर निढाल हो गया। फिर पता नहीं कब तक वे दोनों झूमते हुए सड़क पर चहलकदमी करते रहे। अचानक टैक्सीवाले को सामने पाकर वे सचेत हो गए। एक-दूसरे को देखकर हंस दिए और टैक्सी में बैठ गए। सीधे होटल न आकर वे बाजार में कहीं कॉफी पीने उतर गए और यूँ ही टहलने लगे। ठीक-ठाक होटल देखकर वे बैठ गए। काफी देर तक कॉफी की चुस्कियाँ लेते हुए बातें करते रहे। अनय की निगाह में अचानक कुछ चमका, 'बाबूजी ने सपनों-सी यह जिन्दगी देने के लिए क्या नहीं किया...' वह खयालों में खो गया। पर उसका खोना श्वेता की निगाहों से बच नहीं पाया।

"कहाँ खो गए?" श्वेता की शोखी अनय को बटोर लाई और वह एक घूँट में बची हुई कॉफी गले के नीचे उतार कर उठ खड़ा हुआ।

"चलो होटल चलते हैं।"

"ठहरो ना, ऐसी भी क्या जल्दी है?"

"चलो भई"...श्वेता को अनय ने कुछ ऐसे अन्दाज से देखा कि श्वेता के मुँह से अनायास ही निकल गया "हट, शरारती कहीं के..."

"अच्छा ठीक है भई इसी सड़क पर टहलते हैं। सुना है, यहाँ का भुना चना बहुत मशहूर है।" फिर चने का एक पैकेट लेकर वे दूर तक यूँ ही भटकते रहे। बाद में, श्वेता ने ही कहा, "चलो अब होटल चलते हैं?" फिर श्वेता अनय की बाँह पकड़कर चलने लगी।

सारंग पता नहीं कब से अपने पापा को निहार रहा था। अनय खिलौनों के बीच नारियल की जटाओं से बने साधु को निहार रहा था। बाबूजी याद आए थे। आँखें भर आयी थीं। उसकी डबडबाई आँखों में बाबूजी मानों मुस्करा रहे थे, 'बेटे तेरे परिवार को देखकर, तेरी सफलता देखकर मैं बहुत खुश हूं...' फिर जैसे उन्होंने अनय की बुदबुदाहट सुनी, 'बाबूजी बहुत कुछ छूट गया...बहुत कुछ करना छूट गया' ...'कुछ नहीं छूटा बेटे...' जैसे अनय को छूकर कह रहे हों, 'सुखी रहो...' 'पर बाबूजी मैं आपके लिए छड़ी नहीं ला पाया था... तब।

आपने याद से कहा था'...'कोई बात नहीं बेटे...देखो मैं हूँ न तुम्हारे साथ...सारंग तुम्हें कैसे निहार रहा है?'

अनय ने आँखें पोंछी। साधु जटाओं के बीच से अनय को जैसे निहार रहा हो। सिमरन पापा का हाथ पकड़कर दुकान से बाहर चलने को कह रही थी। दुकान की भीड़ छंट चुकी थी। सारंग पापा की इस खोई-सी मूरत को निहार रहा था। श्वेता को मालूम था अनय को जरूर बाबूजी याद आ रहे होंगे।

अनय को बड़ा अजीब लगा अपना खो जाना। उसने दोनों बच्चों को भींच लिया और श्वेता से बोला, 'चलो...'

श्वेता से वह आँख नहीं मिला पाया था... श्वेता समझ रही थी अनय को, "कम आन, अनय..."

दुकान से बाहर निकलकर उस छड़ीवाले आदमी को अनय की निगाहें बेसब्री से खोज रही थीं।

बाहर हल्की-सी बारिश हो रही थी। वह छड़ीवाला उसी दुकान के बाहर बारिश रुकने का इन्तजार कर रहा था। उसने बड़ी आशाभरी निगाह अनय पर डाली, जैसे कह रहा हो, 'आज एक भी छड़ी नहीं बिकी...घर क्या मुँह लेकर जाऊँ?' अनय पलभर उसके सामने खड़ा रहा और एक छड़ी की ओर इशारा कर बोला, "ये वाली निकालो..."

"साहब, सिर्फ अस्सी रुपये में ही दे दूंगा। आज एक तो छड़ी बेचूं।"

अनय ने छड़ी ले ली और उसे एक सौ बीस रुपये देकर अकेला ही आगे बढ़ गया... छड़ी वाला देखता रह गया...अनय रह-रहकर छड़ी पर हाथ फेर रहा था। मानों बाबूजी से बातें कर रहा हो।

पीछे-पीछे तीनों आ रहे थे। छड़ीवाला हैरत से उन चारों को निहार रहा था। फिर उसने पैसे गिने और माथे से लगाने के बाद जेब में रख लिए...अनय का चेहरा वह कभी नहीं भूल पाएगा।

उसने झटके से छड़ियों का गट्ठर पीठ पर उठा लिया। उसकी कमर कुछ सीधी हो गयी थी। उसे लगा कुछ दिन और वह बिना छड़ी के चल सकता है। छड़ीवाले के पैर तेजी से अपने घर की ओर बढ़ रहे थे।

❑❑❑

विचार-

स्वरांगी साने

सैटल होना मतलब आपके लिए क्या है?

समाज में रुतबा उसी का है जिसके पास बंगला-गाड़ी और खूब सारा पैसा है...तो हमें भी इस दौड़ में हिस्सा लेना ही पड़ेगा। अश्विन ने चलते-चलते ही यह बात कही थी लेकिन बहुत विचारणीय मुद्दा है यह। सामाजिक रुतबा-प्रतिष्ठा पहले भी पैसों से ही आँकी जाती थी और आज भी लेकिन कुछ दशक पहले तक समाज में मान-प्रतिष्ठा-इज्जत उनकी भी थी जिनके पास हुनर था, कला थी, जो लिखने-पढ़ने वाले थे, शिक्षक थे या जो मेहनती थे। इन कुछ सालों में इससे कुछ फर्क नहीं पड़ रहा कि आप क्या करते हैं या किस तरह पैसा कमाते हैं, बस आपके पास पैसा होना महत्वपूर्ण हो गया है।

सैटल होना मतलब आर्थिक स्थिरता से उसका तात्पर्य नहीं होना चाहिए। सैटल या स्थैर्य जब तक मानसिक तौर पर नहीं होगा तब तक बैंक के खाते में पैसा और तिजोरी में रखी ज्वैलरी का कोई औचित्य नहीं है। एक परिचित के सुविधा संपन्न जीवन जीने वाले बेटे ने आत्महत्या कर ली, उसकी वजह केवल पैंडामिक नहीं थी। वैश्विक आपदा तो एक बहाना भर बन गया, जो मानसिक रूप से कमजोर थे वे इसमें टूट गए लेकिन जो सशक्त थे वे इस आपदा से भी उबर ही गए न!

फाकापरस्ती में भी सुख से दिन गुजार लेने की मानसिकता ही खो गई है..जैसे इस पर मुहर लगाते हुए किसी ने पूछ ही लिया कि फाकापरस्ती मतलब क्या? सबसे पहला मतलब तो यही समझ आता है कि फाके में दिन गुजारना शब्द ही शब्दकोश से गायब हो गया है। नई पीढ़ी के सामने ऐसी नौबत भी नहीं आई और उन्हें उसकी जरूरत भी महसूस नहीं हुई। पहले तो फाके खाना मतलब जो मिल जाए उसमें निबाह कर लेना, न मिले तो भूखे सो जाना, पानी पीकर पेट भर लेना, चना-चबैना खा लेना पर शिकवा-शिकायत नहीं करना इसकी समझदारी इस पीढ़ी तक पहुँचाना बहुत जरूरी है। नैतिकता-सिद्धांत आदि बातें तो बाद में आएँगी, पहले तो यह जानना होगा कि हम जी क्यों रहे हैं? पैसा कमाने के लिए जीना ही जीना नहीं होता। कबीर वाणी कैसे युवाओं तक पहुँचाई जाए कि 'सांई इतना दीजिये, जा में कुटुम (कुटुम्ब) समाय, मैं भी भूखा न रहूँ, साधु ना भूखा जाय'। जीवन गुजारने के लिए जितने धन की न्यूनतम आवश्यकता हो उतना बहुत है बाकी तो लालसाओं का आकाश अनंत है।

बीस-तीस साल पहले तक कक्षा में पहले तीन क्रमांक हासिल करने वाले छात्रों से अपेक्षा होती थी कि वे डॉक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस. या तत्सम कुछ बनेंगे, सुविधा संपन्न जिएँगे, बाकी के छात्रों से न तो यह उम्मीद थी न उनकी भी ऐसी कोई आशा-आकांक्षा होती थी। अब तो हर क्षेत्र में असीम संभावनाएँ हैं, यह एक अच्छा पहलू है तो इसका दूसरा पहलू भी है कि सबकी महत्वाकांक्षाएँ बढ़ गई हैं। अरब में गधे-घोड़े जैसे एक समान कहलाते हैं वैसा ही हाल हो गया है। हर किसी को पैसा कमाना है। पर क्या पैसा कमाने के बाद सुख मिलने की गारंटी है? 'सुख मिलना, सुखी रहना' और 'पैसा कमाना, पैसा होना' इन दो चीजों को अलग-अलग कर समझना और समझाना भी होगा। जान लीजिए गरीबी में भी चैन की नींद ली जा सकती है और डनलप के गद्दे भी घोड़े बेच सोने का आनंद नहीं दे सकते तभी आप चैन की बंसी बजा सकते हैं।

❑❑❑

गतिविधियां-

भारत की सांस्कृतिक धरोहर

कुंभ मेला पृथ्वी पर तीर्थयात्रियों का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण समागम है, बिना किसी आमंत्रण के लाखों लोग इस स्थान पर पहुंचते हैं। समागम में तपस्वी, संत, साधु, आकांक्षी-कल्पवासी और आगंतुक शामिल होते हैं। हालांकि, इसके मुख्य आयोजक अखाड़ों और आश्रमों, धार्मिक संगठनों या भिक्षा पर रहने वाले व्यक्ति होते हैं। कुंभ मेला देश में एक केंद्रीय आध्यात्मिक भूमिका निभाता है, जो आम भारतीयों पर एक मंत्रमुग्ध प्रभाव डालता है। यह आयोजन खगोल विज्ञान, ज्योतिष, अध्यात्म, अनुष्ठानिक परंपराओं और सामाजिक और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों और प्रथाओं के विज्ञान को समाहित करता है।

❑❑❑

कविता-

नवीन माथुर पंचोली

कहने से करना बेहतर।
रखना इसको अपनाकर।

जितने बीत गए पहले,
फिर से आयेंगे अवसर।

मुश्किल जो भी दाँव यहाँ,
लड़ना है अपने दम पर।

होगा दूर सफर जिसका,
ठहरेगा कैसे पल भर।

उड़ना है पर फैलाकर,
जिनको छूना है अम्बर।

उतना बाहर निकलोगे,
जितना उतरोगे अन्दर।

अमझेरा, जिला-धार, म.प्र.

❑❑❑

कविता-

डॉ. शैलेन्द्र श्रीवास्तव

महाकुम्भ

भव्य है, दिव्य है, अदभुत है
कुम्भ है, कुम्भ है, महाकुम्भ है
भारत की सांस्कृतिक धरोहर
अलौकिक, अनुपम, मनोहर
सुअवसर कल्पवास का
साधना का आराधना का
प्रायश्चित का आत्मचेतना का
संगम में पवित्र स्नान का
तीर्थराज प्रयागराज
ईश्वरीय अनुकम्पा, विलक्षण संयोग
बृहस्पति का वृषभ राशि में प्रवेश
सूर्य का मकर राशि में प्रवेश
पृथ्वी के सर्वप्रथम यज्ञ की प्रणम्य भूमि
गंगा यमुना सरस्वती त्रिवेणी का संगम
प्राचीन अर्वाचीन परम्परा का संगम
और इसके पावन तट पर
भव्य दिव्य अप्रतिम पूर्णकुम्भ
सनातनी महोत्सव हिन्दुत्व का
आस्था आध्यात्मिकता संस्कृति का
उच्चतम धार्मिक आयोजन विश्व का
विशालतम समागम मानवता का
शैव-वैष्णव अखाड़ों का
नागा-साधू अखाड़ों का
अन्य-साधू अखाड़ों का
नारायणी-नारायणों का
जब त्रिवेणी संगम का पवित्र जल
सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति की
सकारात्मक, विद्युतीय, चुम्बकीय विकिरणों से...
होता है अभिमंत्रित अदभुत अतुलित
परिणामस्वरूप प्रभाव...
पाप नाशक, मोक्षदायक
कथा पौराणिक प्रतीकात्मक
सांकेतिक किन्तु प्रेरक
अमरत्व की आकांक्षा में
अमृत कलश की आकांक्षा में
देवताओं असुरों द्वारा क्षीर-सागर का मंथन
आधार मंदराचल पर्वत रस्सी वासुकी नाग
हुआ समुद्र मंथन आरम्भ
सर्वप्रथम निकला विष कालकूट
जन रक्षणार्थ, कल्याणार्थ
शिव विषपान कर गए घूँट-घूँट
कहलाए देवाधिदेव-नीलकंठ
समुद्र मंथन से हुए प्राप्त
चौदह अदभुत रत्न...
ऐरावत हाथी, कामधेनु गाय
उच्चैः श्रवा अश्व, कौस्तुभ मणि
कल्पवृक्ष, रम्भा अप्सरा
महालक्ष्मी, वारुणी मदिरा
चन्द्रमा, शारंग धनुष
पाञ्चजन्य शंख, धन्वन्तरी
अन्ततः प्राप्त हुआ अमृत कलश
तत्पश्चात आरम्भ हुआ
अमृत कलश अधिकार हेतु
देवताओं, राक्षसों का भीषण संघर्ष

राक्षसों से कलश रक्षा हेतु
इन्द्रपुत्र उच्चौः श्रवा जयंत
कलश ले भागता रहा
बारह दिवसों तक दैवीय गणनानुसार
देवताओं का बारह दिन
पृथ्वी के बारह वर्षों तक
आधिपत्य हेतु भागता रहा
थक कर विश्रामार्थ
चार स्थानों पर रखा कलश
प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक अदभुत संयोग था
सूर्य चन्द्रमा और अन्य ग्रह
अद्वितीय ज्योतिषीय संरेखण पर थे
भागाभागी में छलक पड़ीं
अमृत कलश की बूँदे
गिरीं जहाँ-जहाँ कलश रखा था
उन्हीं चार स्थानों पर
आयोजित होता है महोत्सव कुम्भ
समुद्र मंथन और ये अमृत बूँदे
मानवता को दे गईं सम्मान
आध्यात्मिक चेतना का वरदान
अभूतपूर्व रहस्मय अदभुत शक्तियाँ
दे गईं महाकुम्भ महोत्सव अभूतपूर्व उत्सव
ऋषियों ने ग्रह नक्षत्र गणना से
निश्चित कर दिया था कालखण्ड
महाकुम्भ 144 वर्ष
पूर्णकुम्भ 12 वर्ष
अर्धकुम्भ 6 वर्ष
कुम्भ 3 वर्ष
माघ कुम्भ प्रतिवर्ष
समुद्र मंथन और अमृत बूँदे
संदेशा दे गईं मानवता को
स्वयं के आत्म मंथन का
क्योंकि आत्म मंथन से ही
प्रकट होते हैं अमूल्य रत्न
जिसमें सर्वप्रथम सदा प्रकट होता है
कलुषता, नकारात्मकता, ईर्ष्या का
काम का, लोभ का, स्वार्थ का
भयंकर कालकूट विष
जिसे समाज कल्याणार्थ
विषपान कर घूँट घूँट पीकर
सिद्ध, प्रबुद्ध, संवेदनशील मानव को
बनना होता है स्वयं नीलकंठ
गहन आत्म मंथन से
प्राप्त होते हैं शेष अन्य रत्न
और अंत में प्रकट होता है
आत्मबोध का अमृत कलश
मुक्ति का अमृत कलश
जो ले जाता है शान्ति की ओर
ले जाता है अमरत्व की ओर
आत्मबोध करा जाता है
तुम स्वार्थ नहीं परमार्थ हेतु हो
तुम शरीर नहीं आत्मा हो
जिसे ना शस्त्र छेद सकता है
ना अग्नि जला सकती है
ना जल भिगो सकता है
ना वायु सुखा सकती है
आत्मा कभी नहीं मरती है
आत्मा अमर होती है
आत्मा शरीर परिवर्तित करती है
जीर्ण शरीर को नवीन शरीर से
जैसे हम परिवर्तित करते हैं
जीर्ण वस्त्रों को नवीन से
ईश्वरीय आत्मानुभूति होते ही
भाव अहम् ब्रह्मास्मि जागृत होते ही
अमरता का भाव प्रचंड हो जाता है
पुष्ट हो जाता है
प्रबल हो जाता है
अटल हो जाता है
जयतु सनातन जयतु कुम्भ
भव्य है, दिव्य है, अद्भुत है
कुम्भ है, कुम्भ है, महाकुम्भ है।

❑❑❑

कविता-

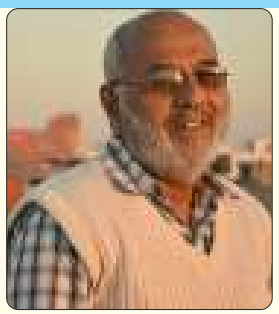

मईनुदीन कोहरी 'नाचीज बीकानेरी'

पतंग महोत्सव

आओ आओ आज पतंग उड़ाएं।
मेरी छत पर सब आ पतंग उड़ाएं।।
आओ राम - जेम्स आओ रहमान।
मकर संक्रांति है खूब पतंग उड़ाएं।।

कोयल सी काली सादा डोर के संग।
आकाश में आज पतंगों से करें जंग।।
कभी ढील से या कभी खींच के करें।
कटी पतंग को लूटने में भी होती जंग।।

कटी पतंग इक घर से जाती दूजे घर।
चांद सितारों सी नभ में उड़े फर-फर।।
ठुमकी दे गुड़क-गुड़क कर नभ में छाए।
बच्चे बूढ़े मांझे संग उड़ाए सर-सर-सर।।

जातपांत-धर्म से पतंग का नहीं नाता।
भोलाराम की कटी पतंग जफर लूटता।।
खान की पतंग पंडित की छत पर गिरे।
पतंगबाजी से आपसी भाईचारा बढ़ता।।

आओ मकर संक्रान्ति पे पतंग उड़ाएं।
मन बहलाएं छत पे जा पतंग उड़ाएं।।
नभ सारा भरा रंग-बिरंगी पतंगो से।
अहद करें चाइनीज-मांझे से न उड़ाएं।।

मोहल्ला कोहरियान, पुरानी गिनाणी, बीकानेर 334001

अशोक गुजराती

घुटना

रहती है जिज्ञासा
बच्चा कब चलेगा
घुटने के बल
बढ़ चला है यह चलन
घुटने टेकना हो गया है आम
बैठा है कोई घुटनों में दिये सर
कहीं उदासी है
या कोई सोच करती परेशान
मर रहे घुट-घुट कर सीमा पर कई फौजी
कुछेक आतंकियों का घुटता जो दम
होते हम संतुष्ट
सुन घुटे हुए
राजनेताओं के बड़बोले वक्तव्य
मोड़ कर घुटने सम्पन्न कई क्रियाएं
प्रेम निवेदन हो, चाहे प्रार्थना
प्रात:कालीन जरूरत
अथवा सर्वव्यापी समागम
योग हो या फिर नमाज
तकलीफ होती है किसी भी आयु में
जब घुटने नहीं दे पाते साथ
युवा मन का

बी-403, निहारिका ऐब्सोल्यूट,
सेक्टर-39-ए, खारघर-नवी मुंबई-410 210

विजय गर्ग

पर्यावरण बचाने के साथ संवारे अपना भविष्य

जिस तरह से जनसंख्या तेजी से बढ़ती जा रही है, उसी तेजी से जंगलों में पेड़ों की कटाई भी की जा रही है। इसका नतीजा पर्यावरण प्रदूषण में बढ़ोतरी के रूप में देखने को मिल रहा है। प्रदूषण के कारण स्कूलों और दफ्तरों के बंद होने, आउटडोर स्पोर्ट्स और एक्टिविटी पर रोक, निर्माण कार्यों और भारी वाहनों के संचालन पर प्रतिबंध लगाने जैसी चीजें अब आम होने लगी हैं। इसी के चलते ग्लोबल वार्मिंग भी बढ़ रही है।

अर्थव्यवस्था को नुकसान से बचाते हुए प्रदूषण के दुष्प्रभावों को कम करने के लिए पर्यावरण संरक्षण विशेषज्ञों की मांग दुनियाभर में तेजी से बढ़ रही है। एक रपट के मुताबिक, प्रदूषण के कारण भारत को सालाना नौ हजार अरब रुपए का नुकसान होता है जो देश की जीडीपी का लगभग 3.5 फीसद है। हालांकि देश में यूजी स्तर पर कम संस्थानों में कोर्स उपलब्ध होने के कारण थोड़ी परेशानी होती है, लेकिन बेहतर नौकरी के लिए ऊंची डिग्री जरूरी होती है।

विशेषज्ञों के कई विकल्प- पर्यावरण विज्ञान का संबंध पर्यावरण को प्रभावित करने वाले कारकों और जीवित प्राणियों की पर्यावरण पर निर्भरता से है। इसमें पर्यावरण परिवर्तन, जैव विविधता, अलग-अलग तरह के प्रदूषण और पर्यावरण पर इनके प्रभाव आदि के बारे में बताया जाता है। इसका क्षेत्र काफी व्यापक है और इसे अलग-अलग शाखाओं में बांटा गया है। पर्यावरण रसायन विज्ञान वातावरण में स्रोतों, प्रतिक्रियाओं, परिवहन, प्रभाव, और रसायनों की चेतावनी और इन पर मानव और जैविक गतिविधियों के प्रभाव को परिभाषित करने का अध्ययन है। जियो साइंस पृथ्वी की संरचनाओं और वायुमंडलीय विज्ञान पृथ्वी के वायुमंडल और इसकी विभिन्न आंतरिक कार्यशील भौतिक प्रक्रियाओं का अध्ययन है। पर्यावरण सूक्ष्म जीव विज्ञान स्थलीय, वायु, जलीय, समुद्री और अलौकिक वातावरण में सूक्ष्मजीवों के कार्य, संरचना और अंत:क्रिया का अध्ययन है। जबकि परिवेशीय आंकलन पर्यावरणीय मूल्यांकन को एक परियोजना के पर्यावरणीय प्रभावों की तीव्रता और महत्व का मूल्यांकन करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है।

जरूरी योग्यता- भौतिकी, रसायन और बायोलाजी के साथ बारहवीं कर चुके छात्र पर्यावरण विज्ञान के स्नातक डिग्री कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं, लेकिन यूजी कोर्स देश के कुछ संस्थानों में ही मौजूद हैं। अधिकतर संस्थानों में प्रवेश जेईई या संस्थान द्वारा आयोजित परीक्षा के जरिए मिलता है। एमएससी कोर्स में प्रवेश के लिए साइंस स्ट्रीम में ग्रेजुएशन कर चुके छात्र आवेदन कर सकते हैं। कई सरकारी और निजी संस्थानों से इसका पीजी डिप्लोमा कोर्स भी किया जा सकता है।

बेहतर करिअर के लिए उच्च डिग्री जरूरी- पर्यावरण विज्ञान रिसर्च आधारित स्ट्रीम है और इसमें बेहतर करिअर के लिए उच्च डिग्री जरूरी मानी जाती है। मास्टर डिग्री या पीएचडी कर चुके छात्रों के लिए नौकरी के अवसर ज्यादा होते हैं। उन्हें ज्यादा पैकेज मिलता है और करियर में आगे बढ़ने की संभावनाएं भी ज्यादा होती हैं।

वेतन- यूजी कोर्स करने के बाद निजी क्षेत्र में एंट्री लेवल पर छात्रों का शुरुआती पैकेज दो से तीन लाख रुपए सालाना तक होता है। मास्टर डिग्री ले चुके छात्रों को तीन से चार लाख रुपए सालाना पैकेज पर नियुक्त किया जाता है। शीर्ष संस्थानों से कोर्स करने वाले छात्रों को पांच से छह लाख रुपए सालाना तक का पैकेज मिल सकता है

अजेय स्वाभिमान-
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

मोहन शिरकर

जीवन के अलग-अलग प्रसंगों घटनाओं के माध्यम से किसी व्यक्ति के चरित्र, स्वभाव, विचार आदि को उसके समग्र व्यक्तित्व को जाना जा सकता है। नेताजी सुभाषचंद्र बसु से जुड़े सैकड़ों ऐसे प्रसंग है, जिनसे नेताजी की निर्भीकता, वीरता, देशप्रेम और उनकी मार्मिक सहृदयता को जाना जा सकता है। ऐसे ही कुछ प्रसंग यहां दिये जा रहे हैं।

श्रेष्ठ दान

23 अक्टूबर 1943 के दिन सिंगापुर से 'आजाद हिंद सरकार' (आरजी हुकूमत-ए-आजाद हिंद) के अधिनायक नेताजी सुभाषचंद्र बसु ने ब्रिटेन और अमेरिका के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। दुनिया के दो बड़े अमीर और ताकतवर देशों के खिलाफ गुलाम देश के एक जांबाज ने युद्ध छेड़ने का ऐलान कर तो दिया, लेकिन युद्ध के लिए जो अरबों-खरबों रुपये लगेंगे, वे कहां से आयें? स्वाभिमानी नेताजी ने पहले ही कह दिया था कि जर्मनी-जापान बर्मा-सिंगापुर की जमीन से भारत की आजादी की जो जंग लड़ी जायेगी, वह विदेशियों के पैसों के बल पर नहीं। अपने देश की आजादी की लड़ाई के लिए पैसा भी उन विदेशों में रहने वाले अप्रवासी भारतीयों की ही देना चाहिये। सो चंदा इकट्ठा करने की गरज से नेताजी ने दक्षिण-पूर्व एशिया के छोटे-बड़े देशों के तूफानी दौरे शुरू कर दिये। सिंगापुर की ऐसी ही एक चंदा-सभा में देशभक्ति से ओतप्रोत हृदयों को टहेलित कर देने वाली नेताजी की मार्मिक अपील के बाद सभा में मौजूद लोगों ने दिल खोलकर चंदा देना शुरू किया। बड़े-बड़े सेठ-साहूकार उद्योगपति-अफसर, लाखों-करोड़ों की राशियां।

अचानक भीड़ चीर कर कांपते-थरथराते बदनवाली फटे चीथड़े कपड़ों में किसी तरह मौसम के वार से बचती एक बूढ़ी भिखारिन मंच के सामने आ खड़ी हुई। मंच पर थे नेताजी और शाहनवाज खान। बुढ़िया ने अपने चीथड़े आंचल की कोर में बंधी गांठ को कांपते हाथों से खोल एक-एक रुपयों के तीन तुड़े-मुड़े मैले-कुचौले नोट नेताजी की ओर बढ़ा दिये।

सभा स्तब्ध। शाहनवाज अवाक। नेताजी की आंखों में आंसू। बुढ़िया के पैर छूते हुए उन्होंने तीन रुपयों के उन नोटों को अपने माथे से छुआया और पूछा- 'अम्मा, तेरे पास और कुछ नहीं?' बुढ़िया ने होंठ उलट दिये, हथेलियां पलट दीं।

रुंधे स्वर में नेताजी ने कहा- 'श्रेष्ठ दान!'

माला का मूल्य

'आजाद हिंद फंड' के लिए चंदा इकट्ठा करने का दौर चल ही रहा था। बर्मा की ऐसी ही एक सभा में ज्यों ही नेताजी पहुंचे, भारत को आजाद देखने की चाह रखनेवाले बर्मा के आप्रवासी भारतीयों ने फूलों की एक माला नेताजी के गले में डाल दी। नेताजी की मार्मिक अपील, प्रखर और विचारोत्तेजक धाराप्रवाह भाषण के बाद लोगों ने दिल खोलकर चंदे दिये। उम्मीद से ज्यादा

धनसंग्रह हुआ। अंत में नेताजी ने कहा- 'आप लोगों ने यह माला मुझे पहनायी है। अभी इसके फूल ताजा हैं। खुशबू भी है। लेकिन कुछ घंटों बाद ही ये फूल भी मुरझाने लगेंगे, खूशबू भी चली जायेगी। तब भला इस माला की क्या कीमत रह जायेगी! मैं इसे बेशकीमती बनाना चाहता हूं, क्योंकि यह आप लोगों के देशप्रेम का प्रतीक है। इसे मैं यहीं अभी नीलाम करना चाहता हूं।'

तुरंत एक सिख युवक ने बोली लगायी- 'एक लाख!' चुप्पी छा गयी। युवक माला लेने मंच की ओर बढ़ा, तभी दूसरी बोली की आवाज आयी- 'दो लाख!' यह बर्मा के भारतीय व्यापारी बृजलाल जायसवाल की आवाज थी। सिख युवक- 'ढाई लाख।' बृजलाल- 'तीन लाख।' तीन लाख पच्चीस हजार! यह नयी आवाज थी बैंकॉक के एक सज्जन की। बृजलाल श्साढ़े तीन लाख! 'सज्जन- चार लाख।' बृजलाल- 'साढ़े चार लाख।' सिख युवक ने बोली लगायी 'पांच लाख!'

बृजलाल बड़े सेठ थे। चिढ़ गये। युवक और सज्जन को पछाड़ते हुए बोली लगा दी- 'सात लाख!'

सन्नाटा छा गया। सज्जन पीछे हट गये। पंजाबी युवक के चेहरे पर मायूसी छा गयी। बोली सात लाख पर समाप्त हुई। माला बृजलाल को मिलने वाली थी। यह तय था।

तभी सिख युवक नेताजी के सामने आ खड़ा हुआ। आंखों में आंसू थे। रुंधे कंठ में पागलों सा वह बोलने लगा- 'नेताजी, माला मुझे चाहिये।'

बृजलाल ने चिढ़कर कहा- 'वह तो मैं ले चुका।' नेताजी ने बृजलाल को रोककर युवक से कहा- 'बोलो, क्या कहना है तुम्हें?'

युवक रो पड़ा- 'नेताजी, पांच लाख तो मैं बोल ही चुका हूं। अब मेरा घर, मेरी गाड़ी, मेरा पूरा व्यापार, बैंकबैलेंस- सब कुछ नीलामी में लगा रहा हूं। मेहरबानी करके माला मुझे दीजिये।' नेताजी बोले- 'माला तुम्हारी हुई।'

बृजलाल ने कहा- 'लेकिन...' नेताजी बोले- 'अब कोई लेकिन-वेकिन नहीं। अब यह युवक सारे लेकिन-वेकिन से ऊपर है। सेठजी, आपके सात लाख तो मैंने देखे, आप इस युवक की भावना को देखें। जज्बे को देखें। यह अमोल है। रुपयों से इसे तौला नहीं जा सकता। माला इसी की हुई!' युवक के बंगला गाड़ी- व्यापार आदि सब कुछ की कीमत दस लाख आंकी गयी। नेताजी के गले की माला के लिए वह युवक यों तो उस दिन फकीर हो गया था, लेकिन नेताजी के हाथों से फूलों की उस माला को लेकर जब वह मंच से उतर रहा था, तब लग रहा था जैसे कोई सम्राट हो!

ऐसी हिम्मत! ऐसा साहस!!- 28 मई, 1942, जर्मनी। उस वक्त दुनिया के सबसे बड़े ताकतवर और सिरफिरे क्रूर तानाशाह फ्यूरर अडॉल्फ हिटलर के साथ भारत की आजादी की लड़ाई के सिलसिले में चर्चा करने के लिए उसके सामने बैठे थे नेताजी सुभाषचंद्र बसु- गुलाम देश के फरार आसामी! नेताजी ने कहा- 'भारत की आजादी के लिए यह वक्त बहुत ही मुफीद है। हमें ब्रिटेन पर हमला बोल देना चाहिये। जापान और इटली ने भारत के पक्ष में ब्रिटेन पर दबाव बनाने की घोषणा कर दी है। कृपया आप भी घोषणा करें।'

हिटलर- 'विश्वयुद्ध के मौजूदा हालात में यह मुमकिन नहीं।'

सुभाष- 'क्यों?'

हिटलर- 'शायद आपने इसके राजनीतिक पक्ष पर सोच-विचार नहीं किया।' नेताजी- 'जिंदगी भर राजनीति ही की है। मदद करनी हो, तो करें, मुझे कृपया राजनीति न सिखायें।' जर्मनी की धरती पर साक्षात हिटलर के मुंह पर ऐसा करारा जवाब! दुभाषिये वॉन ट्रॉट की बोलती बंद हो गयी थी। हां, सुभाष का माथा ऊंचा था, गर्दन तनी, और आंखें चमकतीं।

ऐसे ही अजेय साहस की एक और मिसाल। नेताजी तब म्यूनिक में थे। 1943 का बारूदी दौर। म्यूनिक महानगरपालिका ने नेताजी के नागरिक अभिनंदन की व्यवस्था की। तैयारियां पूरी की गयीं। अभिनंदन के एक दिन पहले हिटलर ने एक रेडियो भेंटवार्ता में भारत में ब्रिटिश शासन व्यवस्था की तारीफ कर दी। नेताजी भड़क गये। बोले, 'ब्रिटिश सरकार के जूते चाटने वाले हिटलर के देश से मान-सम्मान तो क्या, मैं पीने का पानी तक नहीं लूंगा!'

दुनिया ने दांतों तले अंगुली दबा ली। ऐसी हिम्मत! ऐसा साहस! ऐसा अजेय स्वाभिमान!!

हिटलर ने सुना, तो दंग रह गये। बयान वापस लिया।

❑❑❑

राम विलास शास्त्री

मकर संक्रांति- हिंदू धर्म का एक प्रमुख पर्व

मकर संक्रांति एक ऐसा त्योहार है जो भारत के लगभग हर स्थान पर मनाया जाता है। इस त्योहार को केरल में पोंगल के तौर पर मनाया जाता है। वहीं पंजाब और हरियाणा में इसे लोहड़ी तो पश्चिम बंगाल में इसे पौष संक्रांति के नाम से मनाया जाता है। गुजरात और राजस्थान में कई जगह इसे उत्तरायण के नाम से जाना जाता है। जबकि बिहार में इसे खिचड़ी के नाम से जानते हैं और उत्तर प्रदेश में संक्रांति के रूप में। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इस त्योहार की कहानी क्या है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार **महाभारत काल** में भीष्म पितामह ने अपनी देह त्यागने के लिए मकर संक्रांति के दिन का ही चयन किया था। इसके अलावा मकर संक्रांति के दिन ही गंगा जी भागीरथ के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होकर सागर में जा मिली थीं। साथ ही महाराज भगीरथ ने अपने पूर्वजों के मोक्ष के लिए इस दिन तर्पण किया था

सूर्य देव और शनि देव की कथा- एक कथा के अनुसार, सूर्य देव और शनि देव में मतभेद हो गया था। सूर्य देव ने क्रोध में आकर शनि देव को श्राप दे दिया था। इस श्राप के कारण शनि देव को बहुत कष्ट उठाना पड़ा। बाद में सूर्य देव को अपनी गलती का एहसास हुआ और उन्होंने शनि देव से क्षमा मांगी। शनि देव ने सूर्य देव को क्षमा कर दिया और उसी दिन से सूर्य देव मकर राशि में प्रवेश करने लगे। इस कथा के अनुसार, मकर संक्रांति के दिन सूर्य देव और शनि देव का मिलन होता है और इसी दिन से सूर्य देव की कृपा बरसती है।

भगीरथ और गंगा की कथा- राजा भगीरथ ने अपने पूर्वजों के मोक्ष के लिए गंगा नदी को धरती पर लाया था। गंगा नदी इतनी शक्तिशाली थी कि धरती को नष्ट कर सकती थी। इसलिए भगवान शिव ने गंगा नदी को अपने जटाओं में बांध लिया। बाद में भगीरथ के अनुरोध पर भगवान शिव ने गंगा नदी को धरती पर छोड़ दिया। इस कथा के अनुसार गंगा नदी मकर संक्रांति के दिन ही धरती पर आई थी। इसलिए इस दिन गंगा स्नान का विशेष महत्व है।

भगवान विष्णु का वामन अवतार- भगवान विष्णु ने असुर राजा बलि को पाताल लोक भेज दिया था। बलि ने भगवान विष्णु से तीन पग भूमि मांगी थी। भगवान विष्णु ने तीन पग में ही तीनों लोकों को नाप लिया था। कुछ मान्यताओं के अनुसार भगवान विष्णु ने मकर संक्रांति के दिन ही बलि को पाताल लोक भेजा था।

सूर्य देव का रथ- एक कथा के अनुसार, सूर्य देव का रथ सात घोड़ों द्वारा खींचा जाता है। खरमास के दौरान सूर्य देव के रथ में खर जुड़े रहते हैं जिसके कारण सूर्य देव की गति धीमी हो जाती है। मकर संक्रांति के दिन खर दूर हो जाते हैं और सातों घोड़े रथ को खींचने लगते हैं जिससे सूर्य देव की गति बढ़ जाती है। इस कथा के अनुसार मकर संक्रांति के दिन से सूर्य देव की गति बढ़ने लगती है और दिन लंबे होने लगते हैं।

यशोदा और श्रीकृष्ण की कथा- माता यशोदा ने श्रीकृष्ण को प्राप्त करने के लिए मकर संक्रांति का व्रत रखा था। इस कथा के अनुसार, मकर संक्रांति का व्रत रखने से मनोकामनाएं पूरी होती हैं। इन कथाओं के अलावा भी मकर

संक्रांति से जुड़ी कई अन्य कथाएं हैं। इन कथाओं का उद्देश्य लोगों को धर्म और संस्कृति से जोड़ना है।

पौराणिक कथा– चिरकाल में मधु और कैटभ नामक दो दैत्य थे। जो आसुरी प्रवृति के थे। इनके अत्यचार और दु:साहस से तीनों लोकों में हाहाकार मच गया। इसके बाद भगवान विष्णु जी ने दोनों को वध कर दोनों के धड़ को दो विपरीत दिशा में फेंक दिया। हालांकि, धड़ एकजुट होकर फिर से मधु और कैटभ बन गए और तीनों लोकों में अपना आतंक मचाना शुरू कर दिया।

इसके बाद भगवान विष्णु जी ने आदिशक्ति का आह्वान किया और मां दुर्गा ने दोनों का विध किया। कालांतर में भगवान श्रीहरि विष्णु जी ने मधु और कैटभ को पृथ्वी लोक पर लाकर मंदार पर्वत के नीचे उन्हें दबा दिया, ताकि वह फिर से उत्पन्न न हो सके। तब मधु और कैटभ ने मकर संक्रांति के दिन उनसे दर्शन देने का वरदान मांगा

कथाओं का गौरव– कुछ कथाएं समाज सुधार का संदेश देती हैं। कथाएं हमें यह भी सिखाती हैं कि हमारे कर्मों का फल हमें अवश्य मिलता है। सूर्य देव और शनि देव की कथा इस बात का प्रमाण है। इन कथाओं में ईश्वर की शक्ति को दर्शाया गया है। भगवान विष्णु, शिव और अन्य देवताओं ने अपनी शक्ति से असंभव को संभव किया है। कई कथाएं प्रकृति के महत्व को दर्शाती हैं। जैसे कि गंगा नदी का धरती पर आना। यह हमें प्रकृति के संरक्षण का महत्व सिखाता है। ये कथाएं हमें आध्यात्मिक विकास की ओर प्रेरित करती हैं। हमें सिखाती हैं कि हमें अपने अंदर के देवता को जगाना चाहिए और अच्छे कर्म करने चाहिए।

❑❑❑

आध्यात्म–

युवाओं को सकारात्मक दिशा दे रहा है निरंकारी मिशन

किसी शायर ने लिखा है कि 'होश की बाते करुंगा होश में आने के बाद'। जब इन्सान जोश में होता है तो कई बार अपने होश खो बैठता है और उसका नतीजा उसे भुगतना पड़ता है। युवावस्था में इन्सान के पास इतनी शक्ती, इतना साहस होता है कि वो जो चाहे करने के लिए लालायित रहता है। ऐसे अवसर पर उसे जिस प्रकार की संगति, जिस प्रकार की शिक्षायें, जिस प्रकार के संस्कार प्राप्त होंगे उसी प्रकार का उसका कार्य होगा। मानव जाति का यह सबसे बड़ा दुर्भाग्य समझना होगा कि आज के वैज्ञानिक समझे जाने वाले युग में भी पढ़े लिखे, उच्च तकनिकी एवं अकॅडेमिक विद्याओं में निपूण युवाओं को धर्म का वास्ता देकर या जाति का वास्ता देकर आतंकवाद फैलाने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है।

एक जमाना था जब नशे की समस्यायें केवल बीडी-सिगारेट या शराब तक सीमित थी। लेकिन आज का युवा इससे बहुत आगे निकल गया है। मादक पदार्थों (drugs)

के सेवन से अपने जीवन से ही हाथ धो बैठता जा रहा है। पहले तो चोर-उचक्के बन कर चोरियाँ कर रहा था लेकिन अब तकनीकी ज्ञान का इस्तेमाल करते हुए सायबर गुनाहों द्वारा करोड़ों रुपयों की लूट कर रहा है। इसका मतलब यह हुआ कि इन युवाओं में लियाकत या हुनर की कोई कमी नहीं है। अगर कमी है तो इन्हें मिलने वाले दिशा निर्देशों की। और जिन्होंने इन्हें सही दिशा देनी थी, सही रास्ता बताना था, वो ही बुजुर्ग अगर गलत राह पर चल रहे हों तो बच्चों ने कहां सही राह पकड़नी है? उपदेश तो ढेरों दिये जा रहे हैं लेकिन उसके अनुसार कर्म नहीं प्रस्तुत किए जा रहे। कथनी और करनी में बड़ा अंतर आया है। युवाओं को भटकाने के लिए यह एक सबसे बड़ा कारण है। जिन आदर्शों को लेकर युवावर्ग अपने जीवन की दिशा तय करे ऐसा दूर-दूर तक कोई नजर नहीं आ रहा है। इसलिए युवाशक्ति दिशाहीन होते जा रही है। और जब यह शक्ति दिशाहीन होगी, गलत दिशा पकड़ेगी तो अवश्य ही मानव जाति के लिए समझना चाहिए कि यह खतरे की घंटी बज रही है।

युवाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए भौतिक रूप में कितनी भी शिक्षायें दी जाए, नैतिकता के पाठ पढाये जाएं फिर भी ये शिक्षायें उनके जहन में नहीं उतरती है। इसके लिए युवाओं का आंतरिक परिवर्तन जरूरी है। सच्चाई से वाकिफ होकर, वैज्ञानिक ढंग से, तर्कनिष्ठ और सकारात्मक सोच को अपनाने से युवाओं को जीवन की सही दिशा मिलना कोई मुश्किल नहीं। केवल कोरे उपदेश कुछ नहीं संवार पायेंगे। युवाओं के सामने प्रस्तुत करना होगा एक व्यावहारिक जीवन। एक ऐसा आदर्श जीवन जिसमें शांति हो, सकून हो, चैन हो, प्रेम हो, दया हो, करुणा हो और हर किसी के भले की कामना हो। ऐसे आदर्श चरित्र आज संत निरंकारी मिशन में देखे जा सकते हैं। जरुरत है उनके सान्निध्य में जाकर दिव्य शिक्षाओं को ग्रहण करने की। निरंकारी बाबा हरदेवसिंहजी महाराज ने कहा हैं कि इन्सान की 'आध्यात्मिकता कमजोर होने के कारण ही आज वो दशा इस धरती की, इस संसार की हमें देखने को मिल रही है। अगर आध्यात्मिकता मजबूत होती तो संस्कार भी वो ही होते और उन्हीं संस्कारों के होते हुए इन्सान में इतनी गिरावट न होती, ये दुर्दशा न होती, आज ये खिंचाव न होते, आज ऐसे-ऐसे कुकर्म इन्सान न करता, जिस रास्ते पे आज इन्सान चल रहा है। आध्यात्मिकता के रुप में अगर हम शक्तिशाली है तो हर पहलू मजबूत होता चला जाता है।'

तो आज का युवा जिन समस्याओं से जुझ रहा है उसका हल केवल मात्र आध्यात्मिकता ही दे सकती है। बशर्ते ये आध्यात्मिकता एक कोरा उपदेश मात्र न हो बल्कि Practical spiritualism (व्यावहारिक आध्यात्मिकता) हो। आज यह व्यावहारिक अध्यात्म देखा जा सकता है उन युवाओं में जो संत निरंकारी मिशन की आध्यात्मिक शिक्षाओं के साथ जुड़े हैं। उनकी सोच, उनके बोल और उनकी चाल में कोई अंतर नहीं। मन-वचन-कर्म से एक होकर एक सच्चाई की राह को अपना कर खुद भी सुंदर जीवन जी रहे हैं और दूसरों के लिए भी एक प्रेरणास्रोत बने हुए हैं।

वर्तमान सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज ने देश-विदेश में स्थान स्थान पर निरंकारी युथ सिम्पोजियम के आयोजन करते हुए युवाओं में सकारात्मक ऊर्जा भरते हुए उन्हें संसार के लिए एक वरदान के रूप में तैयार करने का बीड़ा उठाया है। विज्ञान और अध्यात्म का तालमेल बनाते हुए अंध विश्वासों से परे एक सजग, चेतन और जागरूक युवावर्ग का निर्माण कर रहे हैं। इन युवाओं को मिल रही दिव्य शिक्षाओं के कारण उन्हें इस बात का अहसास हो गया है कि आध्यात्मिकता की तरफ बढ़ना याने भौतिक जीवन से निवृत्त होना या जीवन के प्रति उत्साह को खोना नहीं बल्कि कर्म के क्षेत्र में रह कर हमे धर्म की पालना करना है।

आज निरंकारी युवाओं को देख कर यह पता लग जाता है कि इन युवाओं का जोश खत्म नहीं हुआ बल्कि और बढ़ा है। लेकिन जोश के साथ इनको होश भी मिला है। अपनी शक्ती का, अपनी लियाकत का, अपने हुनर का सकारात्मक और पूरी कायनात के भले के लिए कैसा इस्तेमाल किया जा सकता है इसका बोध इन्हें हुआ है। तो एक बार जीवन में सच और झूठ की परख हो जाती है तो फिर सच को अपनाया जा सकता है और फिर सही मायनों में सच्चाई की डगर पर जीवन को चलाया जा सकता है। ईश्वर करे आज के युवाओं को यह सही बोध प्राप्त हो और हर किसी का जीवन सफलता की ओर अग्रसर हो।

- स. वि. लव्हटे, नवी मुंबई

❑❑❑

काली यक्षिणी की कथा

वैर रूपी बीमारी का उपचार : प्रेम, दया, करूणा

हृषिकेश शरण

कुशल लेखक
लोकप्रिय वक्ता
बौद्ध साहित्य विशेषज्ञ
बुद्ध का जीवन एवं शिक्षा
होलिस्टिक मैनेजमेंट सहित
विविध विषयों पर
देश विदेश में व्याख्यान।
एडविन ऑरनल्ड की पुस्तक
'द लाइट ऑफ एशिया'
का हिन्दी अनुवाद।
भूतपूर्व लोकपाल।

एक गृहस्थ की पत्नी बाँझ थी। उसने किसी संतान को जन्म नहीं दिया। इसलिए उसके पति के परिवार वाले उससे बहुत नाराज रहते थे तथा उसे तरह-तरह से प्रताड़ित किया करते थे। इस समस्या से मुक्ति के लिए उस स्त्री ने अपने पति का ब्याह एक दूसरी औरत से करा दिया। पर हृदय से उसे सौतन का आगमन अच्छा नहीं लगा। अत: दो अवसरों पर जब वह नई औरत गर्भवती हुई तब उस औरत ने उसे एक ऐसी दवा दे दी कि गर्भपात हो गया। तीसरे अवसर पर उसने एक ऐसी दवा दे दी कि उस स्त्री का भी उसके गर्भ के साथ ही देहान्त हो गया। मरते समय उस औरत के मन में बाँझ औरत के प्रति घृणा और प्रतिशोध का भाव भरा हुआ था।

अगले जन्मों में उन दोनों में दुश्मनी का सिलसिला जारी रहा। किसी जन्म में पहली औरत दूसरी से बदला लेती तो उसके प्रत्युत्तर में अगले जन्म में दूसरी औरत पहली से बदला लेती। इसी प्रकार भिन्न योनियों में जन्म लेने पर भी उनमें द्वेष का सिलसिला जारी रहा।

समय बीतता गया। जन्म-जन्मान्तर बीत गए। बुद्ध काल आया। बुद्ध काल में उनमें से एक ने श्रावस्ती के एक प्रतिष्ठित परिवार में जन्म लिया तथा दूसरी 'काली' यक्षिणी के रूप में पैदा हुई। वैर का सिलसिला जारी रहा। पहली को एक संतान हुई। दूसरी उसे मारने के पीछे पड़ गई। पहली घबड़ा गई और उसने शास्ता की शरण में जाने का निर्णय लिया। उसे पता चला कि बुद्ध जेतवन में प्रवचन दे रहे हैं। अत: वह दौड़ती हुई सीधी वहाँ पहुँची और अपनी संतान को बुद्ध के चरणों में रखकर उनसे अपनी संतान की रक्षा के लिए प्रार्थना करने लगी। उधर यक्षिणी को बौद्ध विहार में प्रवेश की हिम्मत नहीं हो रही थी। बाद में बुद्ध ने काल यक्षिणी को भी बुलाया तथा दोनों को डाँटा। बुद्ध ने सबों को बताया कि किस प्रकार हर जन्म में वे एक-दूसरे से बदला लेती रही हैं और किस प्रकार वे दोनों एक दूसरे के प्रति घृणा भाव से भरी हुई हैं। बुद्ध ने समझाया कि किस प्रकार घृणा का अंत घृणा से नहीं होता। वरन् घृणा से और अधिक घृणा का सृजन होता है। घृणा का अंत होता है प्रेम, दया, करुणा एवं मैत्री से। दोनों ने अपनी गलती स्वीकार की और बुद्ध के उपदेश के बाद उनके बीच का कलह समाप्त हो गया।

तब बुद्ध ने महिला को आदेश दिया कि वह अपने पुत्र को यक्षिणी की गोद में दे दे। औरत पहले तो हिचकिचाई पर बाद में बुद्ध में अटूट श्रद्धा और विश्वास के कारण उसने अपने पुत्र को उसे दे दिया।

यक्षिणी ने बड़े प्यार से उस बालक को गोद में लिया और उसे चूमा मानों वह उसका ही पुत्र हो। फिर उसे उसकी माँ को वापस कर दिया। दोनों के बीच की घृणा समाप्त हो गई।

❑❑❑

EMPOWER SOCIAL & EDUCATION TRUST
12th EMPOWER AWARDS
PRESENTS
भारत निर्माण योगदान अवॉर्ड 2025
YOU ARE CORDIALLY INVITED
CHIEF GUEST
H. E. PROF.
DR.MADHU KRISHAN
Founder and Chairman
American University USA
GUEST OF HONOUR
25TH JAN 2025
REPORTING TIME 10.00 AM
EVENT START ON 11.00 AM
11.00am - 4.00pm
VENUE
HOTEL GINGER, GINGER MUMBAI AIRPORT PLOT NO 10 & 11, NEHRU ROAD, WESTERN EXPRESS HIGHWAY,
NAVPADA,
VILE PARLE EAST,
MUMBAI MAHARASHTRA 400099
welcome Drink and Tea Coffee and cookies
FOR INQUIRY

आसरा मुक्तांगन की कार्यकारी संपादक पवित्रा सावंत द्वारा अंतरांगण (मेडिटेशन) कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

RNI NO. MAHHIN/2012/45032

महाकुंभ मेला 2025 प्रयागराज

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक महानंदा एम. शिरकर द्वारा साई ऑफसेट, डी-39, अमरज्ञान इंडस्ट्रियल इस्टेट, एस.टी. डेपो के सामने खोपट, ठाणे (महाराष्ट्र) से मुद्रित एवं मंगल प्रभात, सूर्य नगर, विटावा, ठाणे-400605 से प्रकाशित
ईमेल- aasaramuktangan@gmail.com मोबाइल- 09029784346, 08108400605